हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जनवरी, 2007 वर्ष 5 अंक 11

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

दुआ

हम को ख़ुदा दे वस्फ़े हिजाज़ी
हों शब के ज़ाहिद हों दिन के ग़ाज़ी
दे होशमन्दी दे पाक बाज़ी
दुन्या व दीं की दे सरफ़राज़ी
दुन्या भी बेहतर उक़्बा भी बेहतर
अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर

(सानी ह़सनी)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

मुहर्रमुल हराम	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
भारत की सभ्यता पर मुसलमानों का प्रभाव	मौ०स० अबुल हसन अली हसनी	9
इस्लामी जिन्दगी के उसूल	मुफ्ती मु० तकी उस्मानी	10
सीरतुन्नबी	सै० सुलैमान नदवी	11
संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	14
आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	16
आजमाइश का मापदण्ड	अब्दुर्रशीद खैरानी	18
सैलानी की डायरी	मो० हसन अन्सारी	20
मुहम्मदी पैगाम और मिर्जा	मुस्तफा रिफाअ़ी	21
क्या ईमाम के साथ ...	मौलाना नदवी	22
आप का घर	डॉ० रैहान अन्सारी	23
एन्जाइना	प्रो० डा० वी०के० बहल	25
प्रोटीन	इदारा	26
तअजियादारी	अबू मर्गूब	27
अल्लाहु अकबर	मु० सानी हसनी	28
हजरत सुमय्या बिन्त खबात	तालिब हाशिमी	29
अकाइद मंजूम	फतेह मु० ताइब	30
क्या मदरसे आतंकवाद के अड्डे....	हबीबुल्लाह आजमी	31
इस्लामी उसूलों में ही मानवता की ...	मु० सफीयुल्लाह सीवानी	34
जिक्रे हजरत हुसैन (पद्य)	अबू मर्गूब	35
उर्दू और हिन्दी लिखावट	एम० हसन अन्सारी	37
इमाम अबू हनीफा(रह०) की इस्तिकामत	माखूज	39
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

मुहर्रमुल ह़राम

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

मुहर्रम हिजरी सन का पहला महीना है, मुहर्रम के साथ अल–ह़राम भी लगाया जाता है, अगर्चि यह ज़रूरी नहीं है। अ़रबी क़ाअ़िदे से बोलने पढ़ने में म, ल में पेश (उ की मात्रा) के साथ मिल जाता है और चूंकि हिन्दी में अ़रबी अल्फ़ाज़ इस तरह़ लिखना चाहिए कि उस की सह़ीह़ आवाज़ निकल सके इस लिये हम मुहर्रमुल ह़राम लिखते हैं मुहर्रम अल–ह़राम नहीं लिखते कि उस से केवल हिन्दी जानने वाला सह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़ (शुद्ध उच्चारण) से नहीं पढ़ सकता। अल–ह़राम अथवा ह़राम के मअ़ना हैं ह़ुरमत वाला इ़ज़्ज़त वाला (प्रतिष्ठित) क़ुर्आन में बताया गया है कि : जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने आस्मान और ज़मीन को पैदा किया, उसी दिन से अल्लाह के नज़दीक उस की किताब में महीनों की संख्या (तादाद) बारह है उनमें से चार ह़ुरमत वाले महीने हैं। (९:३६)

ह़दीस से साबित है कि वह चार मुह़तरम (प्रतिष्ठित) महीने : रजब, ज़ीक़अ़्दा, ज़िलहिज्जा, और मुहर्रम हैं इन महीनों का अ़रब लोग आख़िरी नबी के आने से पहले भी इह़तिराम (सम्मान) करते थे, क़ुर्आन ने भी इन महीनों को मुह़तरम (प्रतिष्ठि) बताया और इन महीनों में लड़ना भिड़ना यअ़्नी जंग करना मम्नूअ़ (वर्जित) क़रार पाया सिवा इस के कि दुशमन मजबूर कर दे।

इस महीने में इस की दस तारीख़ को अल्लाह तआ़ला ने अपने मह़बूब पैगम्बरों की मदद मुअ़्जिज़ाना (चमत्कारिक) तौर से फ़रमायी है, जैसे नूह़ अ़लैहिस्सलाम की कश्ती का तूफ़ान से बच कर पहाड़ी पर लगना, ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर आग का ठण्डा हो जाना, ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का बनी इस्राईल के साथ फ़िरऔ़न के मुक़ाबले में नजात पा जाना, इस तरह कि दरया में रास्ता हो गया और मूसा (अ़०) ने बनी इस्राईल के साथ दरया पार कर लिया और जब उसी रास्ते से फ़िरऔ़न ने पीछा किया तो रास्ता बन्द हो गया और फ़िरऔन अपनी फ़ौज के साथ डुबा दिया गया, अलबत्ता इबरत के लिए फ़िरऔ़न की लाश बाहर आ गई और वह आज भी किसी म्यूज़ियम में मह़फ़ूज़ (सुरक्षित) है। बनी इस्राईल अपने नबी (अ़०) के साथ नजात पा लेने के शुक्रिये में दस मुहर्रम को रोज़ा रखते थे और हमारे ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मदीना मुनव्वरा आ जाने तक वह रोज़ा रखते रहे। हमारे ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी उस रोज़ अल्लाह तआ़ला के इनआ़मात के शुक्रिये में अपनी उम्मत को १० मुहर्रम को रोज़ा रखने का ह़ुक्म दिया, और एक बार फ़रमाया कि अगर मैं ज़िन्दा रहा तो आइन्दा दस मुहर्रम के साथ नौ या ग्यारह का रोज़ा मिला कर रखूंगा ताकि हमारे और यहूदियों के रोज़े में फ़र्क़ हो जाए इसी लिये उलमा ने लिखा कि सिर्फ़ दस मुहर्रम को रोज़ा न रख कर एक रोज़ पहले या बाद में मिला लेना चाहिए ताकि यहूदियों की मुशाबहत (अनुरूपता) से बचा जा सके लेकिन बअ़ज़ मुह़क़्क़िक़ (विशेषज्ञ) आलिमों ने लिखा है कि अब यहूद के यहां दस मुहर्रम का रोज़ा सिरे से नहीं है इस लिये अब सिर्फ़ दस मुहर्रम को रोज़ा रखने में कोई ह़रज नहीं है मैं इस तहक़ीक़ और राए से इत्तिफ़ाक़ करता हूं (सहमत हूं) दस मुहर्रम का रोज़ा सुन्नत है लेकिन ऐसी अहम सुन्नत है कि सह़ाब–ए–किराम

के नाबालिग़ बच्चे भी यह रोज़ा रखते थे ग़रज़ कि १० मुहर्रम यअ़नी आशूरा का दिन अल्लाह की रहमत व बरकत के एअ़तिबार से बड़ा ही मुबारक दिन है।

लेकिन मिल्लत के बअ़ज़ लोगों ने इसे नहस दिन कह दिया, शायद इस लिये कि इसी रोज़ नवास–ए–रसूल सय्यिदुना हज़रत हुसैन को शहीद किया गया इस्लाम में यह बहुत ही ग़लत बात दाख़िल हो गई। हो सकता है इस नज़रिये को ग़लत बताने ही के लिए मशहूर क़ौल के मुताबिक़ क़ुदरत ने अपने आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पैदाइश व वफ़ात दोनों १२ रबीउ़लअव्वल कर दी आज मिल्लत का एक मुतनफ़्फ़िस भी १२ रबीउ़ल अव्वल को नहस नहीं मानता। इसी तरह हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की तारीख़े वफ़ात २२ जुमादल उख़रा (१३ हि०) हज़रत उ़मर (रज़ि०) का यौमे शहादत यकुम मुहर्रम (स० २४ हि०) हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) का यौमे शहादत १८ ज़िल्हिज्जा (स ३५ हि०) और हज़रत अ़ली (रज़ि०) का यौमे शहादत १८ रमज़ान (स० ४० हि०) को उ़लमाए उम्मत ने नहस नहीं कहा।

शहादत का दर्जा बहुत ही बुलन्द दर्जा है, अल्लाह तआ़ला ने तो शहीद को मुर्दा कहने से रोक दिया बस इस से उस की बुलन्दी का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, शहादत का दर्जा तो इतना बुलन्द है कि ख़ुद अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने शहीद होने की तमन्ना की। यह सहीह है कि जिस ने किसी मुसलमान को शहीद किया उस का ठिकाना जहन्नम है लेकिन जिस रोज़ कोई मोमिन शहीद हुआ वह उस के लिय मुबारक तरीन दिन है।

एक अफ़सोस नाक बात यह हुई कि १० मुहर्रम को रोज़ा रखने के बजाए यौमे ग़म मनाने का रिवाज पड़ गया, बल्कि बअ़ज़ लोगों ने तो इस महीने ही को ग़म का महीना बना लिया पहली से १० मुहर्रम तक तो ग़म की तक़रीबात और इज़हारे ग़म, मेंहदी, अ़लम और बाजे गाजे के साथ इस तरह किया जाता है कि इसे धूम धाम का ग़म कहें तो ग़लत न होगा।

जहां तक ग़म की यादगार की बात है तो इस की तो इस्लाम में गुंजाइश नहीं। इस लिये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आखों के सामने बड़े ग़मनाक वाकिए हुए जैसे ग़ज़्व–ए–बद्र में १४ सहाबी शहीद हुए जिन का दर्जा बहुत बुलन्द है, ग़ज़्व–ए–उहद में ७० सहाबा शहीद हुए, जिन में आप के महबूब चचा हज़रत हम्ज़ा भी थे। बिअ़रे मऊ़ना में ज़ालिमों ने धोखा देकर ७० चुने हुए सहाबा को शहीद कर दिया जिस का रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बहुत ग़म हुआ और आप ने अल्लाह के हुक्म से उन ज़ालिमों पर एक महीने तक नमाज़ में बद दुआ़ की ग़रज़ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने ग़ज़वात व सराया में बहुत से सहाबा शहीद हुए लेकिन आप ने किसी के ग़म की याद न मनाई। इसी तरह हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की वफ़ात हज़रत उ़मर रज़ि० हज़रत उ़स्मान (रज़ि०) और हज़रत अ़ली (रज़ि०) की शहादत पर सहाबा (रजि०) ने शहादत की तारीख़ में गम की याद न मनाई, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि०) ने भी अपने वालिदे मुहतरम की तारीख़ को ग़म के दिन के तौर पर न मनाया, न मातम किया न नौहा पढ़ा न तअ़ज़िया रखा। पस मुसलमानों को चाहिए कि हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत के दिन को ग़म का दिन न मनाएं न उस रोज़ नौहा पढ़ें न मरसिया, न मातम करें न सीना पीटें न तअ़ज़िया रखें, न पायक बने न मुहर्रमी बाजे ढोल ताशा बजाएं। आ़शूरा का रोज़ा रखें और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु और अहले बैत से महब्बत रखें उन को ईसाले सवाब करें, दस मुहर्रम की तख़्सीस क्या रोज़ाना उन के लिए अल्ला तआ़ला से रहमत मांगे.हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर रोज़ाना दुरूद व सलाम का मअ़मूल रखें और दुरूद में आलिही व अस्हाबिही को ज़रूर शामिल करें।

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।

क़ुरआन की शिक्षा

मौ० मंजूर नोमानी

आखिरत के जरूरी होने पर कुरआन की एक दूसरी दलील

कुरआने–मजीद ने आखिरत के जरूरी होने पर एक और पहलू से भी रौशनी डाली है। अपने खास अंदाज में कुरआने–पाक इन्सानों की सही फितरत और सही अक्ल को मुखातिब (सम्बोधित) करके कहता है कि तुम देखते हो कि इस दुन्या में बुराई और भलाई मौजूद है लेकिन इस की सजा और जज़ा (जो अल्लाह तआला की सिफते–अ़दल का तक़ाज़ा है) यहां नहीं मिलती, इस लिये यह जरूरी है कि इस दुन्या की जिन्दगी के बाद कोई और जिन्दगी हो, जिस में नेक बखतों को उनकी नेकियों की जज़ा और मुजरिमों को उन की बदकारियों की सजा मिले। अगर ऐसा न हो तो इस दुन्या के खालिक और पर्वर्दिगार पर इस के कारण बड़ा इलजाम आयेगा।

इस को जरा तफसील से यूं समझिये कि इस दुन्या में सब देखते हैं कि बहुत से पेशावर जालिम बदमाश उम्र भर बड़े बड़े पाप करते हैं, लोगों के जान–व–माल पर डाके डालते हैं, कमजोरों पर जुल्म करते हैं, खुदा के बन्दों के हक मारते हैं, गरीबों को सताते हैं, रिश्वतें लेते और खियानतें करते हैं और उम्र भर ऐश करते हुए, औलाद (सन्तान) के लिय भी बहुत कुछ ऐश के सामान छोड़ कर इस दुन्या से चले जाते हैं और उस के उलट बहुत से अल्लाह के बन्दों को इस हाल में भी देखा जाता है कि वे बेचारे बड़ी नेकी और पारसाई (पवित्र) की जिन्दगी गुजारते हैं, किसी पर जुल्म नहीं करते, किसी के साथ दगा और धोका नहीं करते, किसी का हक नहीं मारते, अल्लाह की इबादत भी करते हैं, उस की मखलूक की खिदमत भी करते हैं इस के बावजूद उन की जिन्दगी तंगी और तकलीफ से गुजरती है कभी कोई बीमारी है कभी कोई तकलीफ और परेशानी है। और बेचारे इसी हाल में दुन्या से चले भी जाते हैं। और नहीं देखा जाता कि उन की नेकी और पारसाई का कोई भी सिला इस दुन्या में उन को मिला हो। पर अगर इस दुन्यावी जिन्दगी के बाद भी कोई और ऐसी जिन्दगी न हो, जहां इन बदकारों और नेकू–कारों को अपने–अपने किये की जज़ा और सज़ा मिले तो यक़ीनी तौर पर खुदा पर इलजाम आयेगा कि उस के यहां दुनया की बे इन्साफ हुकूमतों से भी जियादा अंधेर है। न नेकू कारों की नेकी की कुछ कद्र है, और न जालिमों बदकारों की बदकारी और बदमाशी की कोई सजा है, बल्कि सारे पारसाओं, परहेजगारों और चोरों, डाकुओं के साथ अंधेर नगरी वाला एक ही बरताव है और जाहिर है कि कोई भी सलीम (सही) अक्ल इस को कबूल नहीं कर सकती। अल्लाह तआला की हसती तो बहुत बुलन्द है। यह व्यवहार तो किसी भले आदमी के भी शायाने–शान नहीं है कि वह शरीफों और शरीरों और परहेजगारों और पेशावर बदमाशों के साथ एक सा बरताव करे। कुरआन–मजीद इसी बात को अपने बहुत ही मुखतसर (संक्षित) शब्दों में इस तरह कहता है –

तर्जमा – क्या हम फर्मा बरदारों को मुजरिमों ना फर्मानों के बराबर कर देंगे (यानी ऐसा कभी नहीं होगा) (अल–कलम : ३५)

एक दूसरी जगह इर्शाद है –

तर्जमा : क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाये और जिन्होंने नेक आमाल किये, उन लोगों के बराबर कर देंगे जो दुन्या में फसाद फैलाते फिरते हैं? क्या हम परहेजगारों और बदकारों के साथ एक सा बरताव करेंगे? (ऐसा हरगिज नहीं हो सकता) (स्वादः २८)

एक और जगह इर्शाद है :–

तर्जमा : ये लोग जिन्होंने बुराई का रास्ता इख्तियार कर लिया है, क्या उन का खयाल है कि हम उन मुजरिमों को अपने मोमिन व सालिह (नेक) बन्दों के साथ रखेंगे कि उन की जिन्दगी और उनकी मौत एक जैसी हो? बुरा है उन का यह फैसला और बिलकुल गलत है उन का यह ख्याल। (अलजासिय : २१)

कुरआने–मजीद की इस दूसरी दलील को दूसरे शब्दों में यूं भी अदा किया जा सकता है कि इस दुन्या में

हम देखते हैं कि हर माद्दी (भौतिक) चीज की भी कुछ सिफतें हैं। मसलन आग में गर्मी और जलाने की खासियत है। पानी में ठंडक और बुझाने की खासियत है। जमीन से उगने वाली हर जड़ी–बूटी में कोई न कोई खासियत है यहां तक कि जमीन के कीड़े–मकोड़ों में भी कुछ खासियतें हैं। और इसी तरह इन्साान के हर माद्दी अमल और हर हैवानी अमल के भी कुछ असरात और खासियतें हैं, मिसाल के तौर पर खाना खाने से पेट भरता है और भूक जाती है, पानी पीने से सैराबी हासिल होती है और प्यास बुझती है। दौड़ने–भागने से आदमी थकता है और बदन से पसीना निकलता है। सख्त चीज खाने से पेट में दर्द होता है और दस्त लाने वाली चीज खाने से दस्त आ जाते हैं। पस जरूरी है कि इन्सान के अच्छे बुरे अखलाकी आमाल (जो माद्दी आमाल से यकीनी तौर पर जियादा अहम और दूर रस हैं) के भी कुछ प्रणाम और नतीजे निकलते हों।. मिसाल के तौर पर एक आदमी जो खुद भूका रह कर दूसरे भूकों को खाना खिलाता है, तकलीफ उठा कर और दूर–दूर से पानी लाकर प्यासों को पिलाता है, गरीबों कमजारों की खिदमत करता है, बीमारों की तीमार दारी करता है और दुन्या में अपनी इस नेकी और खिदमत से कोई लाभ नहीं उठाता तो हमारी अक्ल का तकाजा है कि उसकी ये बलन्द अखलाकी नेकियाँ बे असर और बेनतीजा न रहें और उनका जो नतीजा या असर होना चाहिए वह कभी न कभी जरूर जाहिर हो जाये। इसी तरह जो आदमी पाकेट मारी और चोरी को अपना धंधा बना लेता है, या जो दूसरों पर जुल्म करता है, या इसी तरह की दूसरी अखलाकी बदआमालियां (बुरे कर्म) करता है, और इस दुन्या में उस की इन बदकारियों का कोई असर नतीजा नहीं जाहिर होता तो उस आदमी के बारे में भी हमारी अक्ल पूरे यकीन के साथ फैसला करती है कि उस की इन बदकारियों और बदआमालियों का नतीजा भी कभी न कभी जरूर जाहिर होना चाहिए और उस को इन का भुगतान भुगतना चाहिए। सलीम अक्ल इस को किसी तरह नहीं कबूल कर सकती कि अशरफुल–मखलूकात इन्सान जो इस काइनात में सबसे जियादा जिम्मेदार मखलूक है (बल्कि वही अस्ल मक्सूद है, और बाकी जो कुछ है यह सब उसी के लिए है) उस के ऐसे अहम और दूर रस अच्छे या बुरे अमलों का कोई भी असर और कोई भी नतीजा न हो। अगर ऐसा हो तो यह इस दुन्या की फितरत और अल्लाह तआला की उस हिक्मत से बिल्कुल खिलाफ होगा जिस पर अल्लाह तआला ने इस आलम को पैदा किया है।

सूरए– जासिया की जो आयत अभी ऊपर लिखी गयी है उस से बिल्कुल मिली हुयी आयत है –

तर्जमा : और अल्लाह तआला ने आसमानों और जमीन को (और यहां की हर चीज को) सही और हकीमाना उसूल पर पैदा किया है ताकि हर शख्स को उस के किये का पूरा–पूरा बदला दिया जाये, और उन पर जरा भी जुल्म न किया जाय।

आखिरत के बारे में जाहिलाना शंकाएं और शैतानी वसवसे

कुरआने–मजीद ने एक तरफ तो आखिरत के जरूरी और यकीनी होने पर रौशनी डाली और उस पर ईमान लाने की दावत दी है तो दूसरी तरफ उन जाहिलाना और बे वकूफाना शक–शुबहों और वसवसों को साफ किया जो गौर–व–फिक्र न करने वाले आम जिहनों में आखिरत के बारे में पैदा होते हैं, या ईमान और हक की राह से लोगों को रोकने वाले शैतान इन को फैलाते हैं और उन का प्रोपेगंडा करते हैं।

कुरआने–पाक ने जगह–जगह पर मुन्किरीन (इन्कार करने वालों) की इन शंकाओं को नक्ल भी किया और फिर अपने खास समाधान कारक अंदाज में उन के ऐसे जवाब दिये हैं और आखिरत को समझाने के लिए ऐसी दलीलें और मिसालें पेश की हैं कि दिल बिल्कुल मुतमइन हो जाता है और किसी भी अक्ल वाले के लिये इन्कार की कोई गुंजाइश नहीं रहती ।

अखरित के बारे में सब से जियादा मशहूर और पुराना शुब्हा वही इस्तिबआद (समझ में न आने) का और किसी मुर्दे को इस दुन्या में जिन्दा होते हुए न देखने का शुब्हा है, जिस को कुरआन के नाजिल होने के जमाने में अरब के मुन्किरीन भी बार–बार दुहराते थे। और उनसे पहले और उनके बाद मुन्किरीन भी अधिकतर इसी शक को पेश करते रहे हैं। कुरआने–मजीद अपने जमाने के मुन्किरीन के मुतअल्लिक कहता है –

तर्जमा : बल्कि उन्होंने बिल्कुल वैसी ही और वही बात कही जो उनसे अगले मुन्किरीन ने कही थी। उन्होंने कहा क्या जब हम मर जायेंगे और (जमीन में दफन होने के बाद) हम मिट्टी और हड्डियों का ढेर हो जायेंगे तो क्या हम उस के बाद फिर जिन्दा किये जायेंगे (यानी यह बात किसी तरह समझ में आने वाली नहीं है न दुन्या में कभी ऐसा हुआ है) (मुअमिनून : ८१,८२)

(जारी)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

दूसरों को नसीहत करने और खुद न करने का अज़ाब

हजरत उसामा बिन ज़ैद (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि एक आदमी क़ियामत के दिन लाया जायेगा और आग में डाला जायेगा। उसकी अन्तड़ियां निकल पड़ेंगी और उस को इस तरह घुमाया जायेगा जैसे चक्की के गिर्द गधा घूमता है। दोजख वाले उसके गिर्द जमा होंगे और कहेंगे ऐ फुलां। तू तो लोगों को नेकी का हुक्म देता था और बुराई से रोकता था। वह कहेगा, हां, मैं लोगों को नेकी का हुक्म देता था लेकिन खुद नेक काम नहीं करता था और दूसरों को बुराई से मना करता था मगर मैं खुद उस बुराई का मुरतकिब होता था। (बुखारी—मुस्लिम)

मुनाफिक की तीन निशानियां हैं -

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुनाफिक की तीन निशानियां हैं। जब कहे झूठ बोले, जब वादा करे पूरा न करे, जब अमानत रखाई जाये खियानत करे। (बुखारी—मुस्लिम)

अमानत का उठ जाना

हजरत हुजैफः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमसे दो बातें इरशाद फरमायीं, उनमें एक मैंने देख ली। दूसरी का मुन्तजिर हूं। हमसे आपने फरमाया कि अमानत लोगों के दिलों की जड़ में उतरी फिर कुरआन उतरा, उन्होंने कुरआन और सुन्नत का अिल्म हासिल किया। फिर आपने हमसे अमानत के उठ जाने के मुतअल्लिक फरमाया कि आदमी एक नींद लेगा और अमानत उसके दिल से उठा ली जायेगी। और उसका असर निशान की तरह रह जायेगा। फिर एक नींद सोयेगा और अमानत उसके दिल से उठा ली जायेगा और उसका असर छाले की तरह रहेगा। जैसे तुम्हारे पैर पर चिन्गारी पड़ जाये। उस से छाला पड़ जाये। तुम उस को उभरा हुआ देखो हालांकि उसमें कुछ नहीं। फिर आप ने एक कंकरी अपने पैर पर लुढ़का कर दिखाया और फरमाया सुबह को लोग खरीद फरोख्त में लगे होंगे और कोई न होगा जो अमानतों को अदा करे। यहां तक कहा जाएगा कि फुलां महिल्ले में एक अमानतदार है और बअ़ज़ आदमी के लिए कहा जाएगा कि किस कदर मुहज्जब और अक्लमन्द है और उस के दिल में जर्रः भर भी ईमान न होगा कि और मुझ पर ऐसा जमाना आया है कि मैं हर किसी के साथ खरीद व फरोख्त करता था; अगर वह मुसलमान है तो मुझ पर उसका दीन उसको पलटा देगा और अगर यहूदी नसरानी है तो उसका चौधरी उसको मुझ पर पलटा देगा। और आज मैं खरीद व फरोख्त नहीं कर सकता मगर तुम लोगों में फुलां और फुलां से। (बुखारी—मुस्लिम)

कियामत का मन्ज़र

हजरत हुजैफः (र०) और अबु हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तबारक व तआला लोगों को जमा करेगा। मुसलमान खड़े होंगे यहां तक कि जन्नत लाई जायेगी लोग हजरत आदम (अ०) के पास आएंगे और कहेंगे ऐ हमारे बाप हमारे लिये जन्नत खुलवाए। हजरत आदम (अ०) कहेंगे कि तुम लोग अपने बाप की खता की वजह से निकाले गये हो, मैं इसका मर्दे—मैदान नहीं, तुम मेरे बेटे इबराहीम (अ०) के पास जाओ, वह सब हजरत इब्राहीम (अ०) के पास आयेंगे। हजरत इब्राहीम (अ०) कहेंगे मैं इसका मर्दे मैदान नहीं। मेरी दोस्ती तो परे पर्दह ही है। तुम मूसा (अ०) के पास जाओ। जिन्हें अल्लाह तआला ने बेवास्ता शरफे कलाम से मुशर्रफ फरमाया। वह हजरत मूसा (अ०) के पास आयेंगे और उन से अपना किस्सा बयान करेंगे। हजरत मूसा (अ०) कहेंगे, मैं इसका मर्दे मैदान नहीं, तुम हजरत ओसा (अ) के पास जाओ, वह अल्लाह की रूह हैं। और उसका कलिमा है। वह हजरत ओसा (अ०) के पास जायेंगे। हजरत ओसा (अ०) कहेंगे मैं इस का मर्दे मैदान नहीं वह मुहम्मद (स०) के पास आयेंगे और वह खड़े हो जायेंगे। आपको इजाजत दी जायेगी। अमानत और रिश्ता भेजा जायेगा। वह पुल सिरात के पहलुवों पर दाहिने बायें खड़े होंगे और तुम में का अव्वल बिजली की तरह गुजर जायेगा। मैंने कहा मेरे मां बाप आप पर फिदा हों, बिजली कैसे गुजरती है? फरमाया, क्या तुम नहीं देखते कि बिजली गुजरती है और निगाह के फिरने तक पलट आती है। फिर

हवा की तरह गुजरेंगे, फिर चिड़ियों की तरह, फिर आदमियों की तेज दौड़ की तरह उन लोगों के आमाल ले जायेंगे। और तुम्हारे नबी सिरात पर खड़े हुए कहते होंगे, ऐ रब। सलामत रख यहां तक कि बन्दों के आमाल आजिज हो जायेंगे। एक आदमी लाया जायेगा और वह चलने की इस्तिताअत न रख सकेगा तो वह घिसलते हुए चलेगा और सिरात कि किनारों पर कांटे लटके हुए होंगे जिनको पकड़ने का हुक्म दिया जाएगा पस कोई ऐसा होगा जिस को चरका लगा सो वह नजात पा गया, और कोई ऐसा होगा जो जहन्नम में औंधा गिरा दिया जायेगा। कसम उसकी जिसके कब्जे में अबू हुरैरः (र०) की जान है, दोजख की गहराई सत्तर साल की है। (मुस्लिम)

एक सहाबी को कर्ज की फिक्र और अपने बेटे को वसिय्यत

हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (र०) से रिवायत है कि मेरे वालिद ने जंगे जमल के दिन मुझे बुलाया। मैं उनके पहलू में जा खड़ा हुआ। उन्होंने कहा, ऐ मेरे बेटे, आज या तो जालिम कत्ल किया जायेगा या मज्लूम। मेरा खयाल है कि मैं अन्करीब मज्लूम कत्ल किया जाऊंगा। अब मुझे अपने कर्ज की बहुत फिक्र है, बताओ तुम्हारी क्या राय है। हमारा कर्ज अदा कर देने के बाद कुछ बचेगा भी? फिर कहा, ऐ मेरे बेटे ! मेरा माल बेचकर कर्ज अदा कर देना और मुझे वसिय्यत की एक तिहाई मेरे पोतों के लिए है। (यानी अब्दुल्लाह बिन जुबैर (र०) के बेटे)। हजरत हिशाम कहते हैं कि अब्दुल्लाह के बेटे खुबैब (र०) और अब्बाद (र०) हजरत हुबैर (र०) के नौ लड़के और नौ लड़कियां थीं। हजरत अब्दुल्लाह कहते हैं कि वह मुझसे अपने कर्ज के मुतअल्लिक वसिय्यत करने लगे और कहने लगे कि ऐ मेरे बेटे, अगर तुम आजिज हो जाना तो मेरे मौला से मदद चाहना। कसम खुदा की मैं नही समझा। मैंने कहा, कौन मौला? कहा अल्लाह। कसम खुदा की जब मुझे फिक्र होती तो मैं कहता ऐ जुबैर (र०) के मौला उनके कर्ज को अदा कर दे। तो वह अदा हो जाता था। वह अपनी पेशीनगोई के मुताबिक जंग में शहीद हो गये। न एक अशर्फी छोड़ी और न दिर्हम। मगर कुछ जमीनें थीं और जंगल और ग्यारह घर मदीना में। दो बसरे में, एक कूफः में, एक मिस्र में और उन पर कर्ज का बार यों हो गया था कि अक्सर आदमी उनके पास अमानत रखाने आते तो वह कहते कि मैं कर्ज लिए लेता हूं इसलिए कि मैं जायः होने से डरता हूं। वरना न वह कहीं के हाकिम रहे न खिराज का टैक्स वसूल किया। लेकिन जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हजरत अबूबकर (र०) व हजरत अुमर (र०) व हजरत उस्मान (र०) के साथ शरीक होते रहे। जब मैंने उनके कर्ज का हिसाब लगाया तो बाईसा लाख निकला। एक दिन हकीम बिन हिजाम मुझसे मिले और कहा ऐ भतीजे, मेरे भाई पर कितना कर्ज है। मैंने कहा एक लाख और बाकी छुपा ले गया। हकीम बिन हिजाम ने कहा वल्लाह मेरा ख्याल है कि तुम्हारा माल इस को काफी न होगा। मैंने कहा अगर बाईस लाख हों तो कहा, मेरा खयाल है कि तुम उस की अदायगी की ताकत नहीं रख सकते, अगर तुम्हारी ताकत से बाहर हो जाये तो मुझसे मदद चाहना।

हजरत जुबैर (र०) ने गाबः एक लाख सत्तर हजार में खरीदा था। हजरत अब्दुल्लाह ने उसको सोलह लाख में बेचा। फिर हजरत अब्दुल्लाह ने कहा जिस जिस पर जुबैर का कर्ज हो वह इस जंगल में हमसे मिले तो सबसे पहले हजरत अब्दुल्लाह बिन जाफर आये। उन के चार लाख हजरत जुबैर (र०) के जिम्मे थे। हजरत अब्दुल्लाह बिन जाफर ने हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (र०) से कहा अगर तुम चाहो तो मैं मुआफ कर दूं। बोले नहीं। कहा अच्छा मैं ठहर जाऊं सब को देकर बाद में मुझको देना। कहा नहीं। हजरत अब्दुल्लाह बिन जाफर ने कहा तो मेरी तरफ एक टुकड़ा मुन्तकिल कर दो। हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (र०) ने कहा यहां से यहां तक तुम्हारा है। हजरत अब्दुल्लाह बिन जाफर को देकर साढ़े चार हिस्से बाकी रहे। फिर हजरत मुआवियः (र०) के पास आये। उनके पास अम्र बिन उसमान (र०), मुन्जिर बिन जुबैर (र०) ने कहा एक लाख का एक हिस्सा मैंने ले लिया। हजरत इब्नि जमअः ने कहा एक लाख का मैंने लिया। हजरत मुआवियः (र०) ने कहा कितना बाकी रहा, कहा डेढ़ हिस्सा, कहा वह मैंने डेढ़ लाख में खरीद लिया। हजरत अब्दुल्लाह (र०) के हाथ छः लाख में बेच डाला। जब हजरत अब्दुल्लाह ने कर्ज की अदायगी से फरागत पायी तो भाइयों ने कहा कि अब मीरास को तकसीम करो। कहा वल्लाह मैं अभी तकसीम न करूंगा। मैं बराबर चार साल हज में मनादी करता रहूंगा कि जिस का जुबैर (र०) पर कर्ज हो वह हमारे पास आये, हम उसको अदा करेंगे। पस जब चार साल पूरे हो गये तो तकसीम किया और एक तिहाई निकाल लिया था। (वसिय्यत के मुताबिक) हजरत की चार बीवियां थीं, हर बीवी के हिस्से में बारह बारह लाख आये। उनका पूरा माल पांच करोड़ दो लाख था। (बुखारी)

भारत की सभ्यता और संस्कृति पर मुसलमानों का प्रभाव

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

औरत के हुकूक (अधिकार) और कुछ रीति व रिवाज का सुधार :

दूसरा तोहफा जो मुसलमान इस मुल्क के लिये लाए वह औरत की इज़्ज़त और इनसानीयत ख़ानदान के बाइज़्ज़त फ़र्द (सम्मानित व्यक्ति) और मर्द के जीवन साथी की हैसियत से उस के अधिकारों का मानना था, एक ऐसे मुल्क में जहां शरीफ औरतें शौहरों की मौत पर सती हो जाती थीं, क्यों कि समाज और खुद उनकी नजर में शौहर के बअ़द (पश्चात) उन्हें जिन्दा रहने का हक़ ही न था, इस्लाम के बखशे हुए सिन्फ नाजुक (नारी) के अधिकारों की जो अहमियत हो सकती थी, उसके बयान (वर्णन) की जरूरत नहीं।

सती की डरावनी और लर्जा (कपकपी) पैदा करने वाली रीति के सुधार में भी मुसलमान सम्राट और शासकों ने हिन्दुस्तान के मजहबी अकाएद (धारमिक आस्थाओं) और रीति रिवाज के सम्मान और रिआयत के साथ) मुमकिन हिस्सा लिया, हिन्दुस्तान का मशहूर सय्याह (पर्यटक) डाक्टर बरनेर लिखता है :—

"आजकल पहले के मुकाबले में सती की संख्या कम हो गयी है क्योंकि मुसलमान जो इस देश के शासक हैं, इस वहशियाना रस्म (भयानक रीति) को खत्म करने की यथा संभव कोशिश करते हैं अगरचि उसके रोकने के वास्ते कोई कानून मुकर्रर नहीं है, क्योंकि उनकी पालीसी का यह अंश है हिन्दुओं के मुआमलात (आपसी व्यवहार) में हस्तक्षेप करना मुनासिब (उचित) नहीं समझते, बल्कि मजहबी रूसूम (धारमिक रीतियों) के पूरा करने में उनको आजादी देते हैं, फिर भी सती की रस्म रिवाज को बाज एच पेच के तरीकों से रोकते रहते हैं, यहां तक कि कोई औरत बगैर इजाजत अपने सूबे के हाकिम के सती नहीं हो सकती और सूबेदार हरगिज इजाजत नहीं देता, जब तक वाकई तौर पर (वास्तविकता) में इस बात का यकीन नहीं हो जाता कि वह अपने इरादे से बाज नहीं आएगी।

सूबेदार बेवह (विधवा) को बहस मुबाहसे (वाद विवाद) से समझाता है। और बहुत से वअदे वईद करता है, अगर उस का कहना सुनना और तदबीरें (उपाय) प्रभावकर नहीं होतीं तो कभी ऐसा भी करता है कि अपने महल सरा में भेज देता है ताकि बेगमात भी अपने तौर पर समझाएं, मगर बावजूद इन सब बातों के सती की तअदाद (संख्या) अब भी बहुत है खासतौर पर उन राजाओं के इलाकों और अमलदारियों में जहां कोई मुसलमान सूबेदार नहीं है।"

तारीख का फन (इतिहास शास्त्र)

मुसलमानों ने बहुत से नए इल्म भी हिन्दुस्तान में मुनतकिल (ट्रांसफर) किये, उन उलूम में तारीख का फन बहुत अहम (महत्वपूर्ण) है, क्योंकि उस वक्त तक इस फन (विषय) में यह मुल्क बिलकुल खाली हाथ था, यहां कोई किताब वास्तविक रूप में इतिहास की पुस्तक कहलाने की योग्य न थी बल्कि सिर्फ मजहबी नविशते (धार्मिक पुस्तकें) रजमिया कसाएद (युद्ध सम्बन्धी कविताएं) और महाभारत व रामायण के नुसखे (गुटके) मिलते थे, मुसलमानों ने तारीख के फन में पूरे तौर पर कुतुबखाना (पुस्तकालय) तैयार कर दिया। जिसका शुमार (गिनती) इतिहास के बड़े से बड़े कुतुबखानों (पुस्तकालयों) में किया जा सकता है जो किसी मुल्क में वजूद में आए डाक्टर गसटावली बान अपनी किताब "तमद्दुने हिन्द" (भारतीय सभ्यता) में लिखता है—

"कदीम हिन्द (प्राचीन भारत) की कोई तारीख ही नहीं है, उनकी किताबों में बिल्कुल तारीखी वाकिआत (इतिहासिक घटनाएं) दर्ज नहीं हैं और न उनकी इमारत और यादगारों से इस कमी की तलाफी (भरपाई) होती है, क्योंकि पुरानी से पुरानी यादगार (स्मारक) मुशकिल से तीसरी सदी से पहले की है। कुछ मज़हबी किताबों के अलावा जिन में कुछ तारीखी वाकिआत (घटनाएं) कहानियों और किस्सों में दफ़न हैं क़दीम हिन्द (प्राचीन भारत) के हालत का मअ़लूम करना उसी क़दर

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

इस्लामी जिन्दगी के उसूल

मौलाना मुफ्ती मुहम्मद तकी उसमानी

मोमिन वास्तव में वह व्यक्ति है, जो दिल से अल्लाह की वहदानियत मुहम्मद सल्ल० की रिसालत और आप के बताये हुए अकाइद व अहकाम पर अडिग विश्वास रखता हो और इस बात का पुख्तः यकीन हो कि अल्लाह और उस के रसूल सल्ल० ने इन्सानों को जो अहकाम दिये हैं वही इन के दीन व दुनिया की भलाई के ज़ामिन हैं। ईमान का लाज़िमी तकाज़ा यह है कि इन्सान अपना पूरा जीवन अल्लाह और उस के रसूल सल्ल० की हिदायत के अनुसार व्यतीत करे। जिन बातों का उसे हुक्म दिया गया है उसे बजा लाये और जिन से रोका गया है उन से रूक जाये।

एक मोमिन की बुनियादी सिफत यह है कि उस की जिन्दगी अल्लाह की मर्जी के मुताबिक होती है और वह अपने हर काम में पहले यह देखता है कि अल्लाह की तरफ से इस की इजाजत है या नहीं। इजाजत होती है तो करता है वरना रूक जाता है। उसका जीवन मनमानी के बजाय रब मानी पर बसर होता है। इसके नतीजे में तमाम नेक और अच्छी बातें उस में स्वतः पैदा हो जाती हैं। क्योंकि अल्लाह के अहकाम का मकसद यह है कि इन्सान अच्छे गुणों से सुसज्जित और अवगुणों से पाक हो जाये।

<u>मोमिन की सिफात</u> (गुण) विशेषकर जीवन के पांच क्षेत्रों से सम्बन्धित होती हैं – अकीदा (आस्था), इबादत (उपासना) रह सहन, अखलाक (आचरण) और मामलात।

अकाइद के बारे में मोमिन की बुनियादी सिफत कुरआन में यूं बयान की गयी है और वह यह लोग जो ईमान रखते हैं उन हिदायतों पर जो आप सल्ल० पर नाजिल की गयी और उन हिदायतों पर जो आप से पहले पैगम्बरों पर नाजिल की गयीं और वह आखिरत पर यकीन रखते हैं। इन सब को बरहक मानने के बाद वह इस बात का पुख्तः यकीन रखता है कि मरने के बाद उसे अपने एक एक कर्म का जवाब देना होगा।

इस यकीन की बिना पर वह रात के अन्धेरे और जंगल की तनहायी में भी यथा सम्भव ऐसे काम नहीं करता जिस से उस को आखिरत (परलोक) में अल्लाह के सामने शर्मिन्दा होना पड़े। इबादत के विभाग में मोमिन की सिफात यह हैं कि वह अपने आप को सिर्फ अल्लाह का बन्दा समझता है, अल्लाह के सिवा न किसी को पूजता है और न किसी के आगे झुकता है न किसी से डरता है और न उस के सिवा किसी की कुदरत और इख्तियार से किसी मदद का तालिब होता है। और अल्लाह ने इबादत के जितने तरीके मुकर्रर फरमा दिये हैं उन सब को निष्ठा, आजिजी और एहसासेबन्दगी के साथ बजा लाता है। कुरआन कहता है "भलाई वह मोमिन हासिल करेंगे जो नमाज मन लगाकर ध्यान देकर पढ़ते हैं," और "जो लोग रब की बातों पर ईमान रखते हैं और जो उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते" और "जो लोग (अल्लाह की राह में) जो कुछ देते हैं इस तरह देते हैं कि (माल खर्च करने के बावजूद) उनके दिल इस बात से डरे हुए होते हैं कि उन्हें अपने रब की तरफ लौट कर जाना है," ऐसे लोग दौड़ दौड़ कर नेकियों की ओर जाते हैं और इन नेकियों में एक दूसरे से आगे निकल जाते हैं।

मोमिन की सिफत यह है कि वह नेकी में सब से आगे निकलने की कोशिश करता है। और मामलात के क्षेत्र में मोमिन की यह सिफत है कि वह अपनी बात का सच्चा और वायदे का पक्का होता है। और वह किसी से धोखा फरेब का मामला नहीं करता और बेजा तरीके से दूसरे का हक मारने की फिक्र में नहीं रहता है। कुरआन कहता है, "और वह मोमिन कामयाब है जो अपनी अमानतों और अपने वायदों का ख्याल व लिहाज करने वाले हैं।" "अमानत" का शाब्दिक अर्थ है 'हर वह चीज जिसकी जिम्मेदारी किसी व्यक्ति ने उठाई हो, और उस के मामले में उस पर भरोसा किया गया है। इस में माली अमानत तो जाहिर है ही कि अगर किसी व्यक्ति ने अपना माल किसी के पास रखवाया हो तो यह उस की अमानत है जिसे वापस करना उस की जिम्मेदारी है, इसी तरह किसी नौकर की जितने समय के लिए रखा गया उस पूरे समय को नौकरी के काम में लगाना भी अमानत है, और समय की चोरी या काम की चोरी खियानत है।

(उर्दू मासिक 'रिजवान', लखनऊ नवम्बर २००६ से साभार)

●●●

आठवीं किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख्लाक

सय्यिद सुलैमान नदवी

अच्छी बातों के लिए कहना और बुरी बातों से रोकना।

इस्लाम का एक दूसरा अखलाकी उसूल यह है कि तालीमे मुहम्मदी में जमाअत के लोगों पर उन की सकत के अनुसार जमाअत के अन्य लोगों की निगरानी फर्ज है। इसी अख़लाकी फर्ज का दूसरा नाम शरअई "अम्र बिल मारूफ व नही अनिलमुनकर" अर्थात अच्छी बातों के लिये कहना और बुरी बातों से रोकना, है। कुर्आन का इरशाद है :

तर्जुमा : "तुम सब से बेहतर उम्मत हो जो लोगों के लिए बाहर लाई गई हो, अच्छी बात का हुक्म देते हो और बुरी बात से रोकते हो।" "वह अच्छी बात का हुक्म देते हैं और बुरी बात से बाज़ रखते हैं।" (सूरः आले इमरान व सूरः तौबः)

फिर खास तौर से हुक्म हुआ : –

तर्जुमा "अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से रोक।" (सूरः लुकमान) मुसलमानों की तस्वीर यह है कि –

तर्जुमा : और वह आपस में सच्चाई और साबित कदमी की एक दूसरे की नसीहत करते हैं।" (सूरः अल्त अस्र)

तर्जुमा : "और आपस में साबित कदम रहने और मेहरबानी करने की एक दूसरे की नसीहत करते हैं।" (सूरः बलद)

यह वह तालीम है जो तमाम दुनिया के मजाहिब में इस्लाम की अखलाकी निगरानी के उसूल को नुमायां करती है। और मजबूत दिल और साहसी लोगों का यह फर्ज करार देती है कि वह जमाअत और सोसाइटी के मिजाज और कौमों की निगहबानी और उस के बिगाड़ की देख भाल करते हैं।

तौरात में काबील का एक कथन कि "क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं?" ईसाई मजहब के अखलाक का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त बन गया। इसी अखलाक की उसूल ने, योरप के उस कानूनी मसअले की सूरत इख्तियार कर ली है जिस का नाम "शख्सी आजादी की बहाली है।" लेकिन इस्लाम के कानून में इस के विपरीत सचमुच हर व्यक्ति अपने भाई का रखवाला बनाया गया है। आं हजरत सल्ल० ने साफ तौर पर फरमाया जैसा कि अभी गुजरा कि "तुम में हर शख्स निगहबान है और तुम में से हर शख्स से उस के तहत जिम्मेदारी लोगों की निस्बत पूछा जायेगा। कुर्आन पाक में साफ साफ लोगों को नेकी की हिदायत करने और बदी से बचने और बाज रखने का फर्ज मुसलमानों पर वाजिब ठहराया गया है, ताकि सोसाइटी की शर्म और जमाअत का खौफ, लोगों की नेकचलनी का जामिन हो सके। और साथ ही जमाअत का हर शख्स अपने दूसरे भाई को ज़लालत की अन्धियारी से निकाल कर हिदायत की रौशनी में लाने का जिम्मेदार ठहरे।

कुर्आन में अल्लाह ने बनी इस्राईल का एक किस्सा बयान फरमाया है। बनी इस्राईल के लिए सब्त (शनिवार) के दिन किसी किस्म का दुनियावी काम करना हराम था। बनी इस्राईल की एक आबादी समुद्र के किनारे आबाद थी। वह हीला कर के सब्त के दिन मछली पकड़ लेती थी। इस मौके पर उस आबादी में तीन गिरोह हो गये। एक गिरोह वह जो इस से बाज रखने की कोशिश करता था और उस को समझाता था, तीसरा वह था जो यद्यपि इस कार्य में शामिल न था लेकिन उन को समझाने और बाज रखने की कोशिश भी नहीं करता था बल्कि खुदा समझाने वालों से कहता था कि ऐसी हठी की समझाने से क्या फायदा जिन को अल्लाह उन के इस जुर्म की सजा के तौर पर मौत देने वाला है। लेकिन उन पर जब अल्लाह का अजाब (मार) आया तो सिर्फ दूसरा गिरोह बच गया जो अपने तब्लीग (प्रचार) के फर्ज को अदा कर रहा था। बकिया पहला और तीसरा गिरोह बर्बाद हो गया, पहला तो अपने गुनाह की बदौलत और दूसरा अपने तब्लीग़ के फर्ज को छोड़ने के कारण। सूरः आराफ के बीसवें रूकू में यह पूरा किस्सा बयान किया गया है, आखिर में है –

तर्जुमा : "और जब उन में से

एक वर्ग बोला कि तुम क्यों ऐसे लोगों को नसीहत करते हो जिन की खुदा बर्बाद करने वाला या सजा देने वाला है। उन्होंने जवाब दिया कि हम तुम्हारे रब के आगे अपने से इल्जाम उतारने के लिए उन को नसीहत करते हैं, और शायद कि यह नेक बन जायें तो जब वह भूल गये जो उन को समझाया गया था तो हमने उन को जो मना करते थे बचा लिया और गुनाहगारों को उन की बेहुकमी के कारण बड़े अजाब में पकड़ा।"

यह किस्सा बताता है कि इस्लाम की नजर में अपने दूसरे भाइयों को गिरने से बचाना और गिरतों को संभालना और सहारा देना कितना महत्वपूर्ण है और उसके अखलाकी फराइज का यह कैसा जरूरी हिस्सा है कि अगर इस को अदा न किया जाये तो वह भी ऐसी ही गुनाहगार है जैसा वह जिसने इस काम को किया। अल्बत्ता भाई का फर्ज उस को समझा देने और बता देने के बाद खत्म हो जाता है। जबरदस्ती मनवा देना उसका फर्ज नहीं और उसका क्या बल्कि रसूल का भी यह फर्ज नहीं। फरमाया –

तर्जुमा : "रसूल का काम सिर्फ सन्देश पहुंचा देना है।" (सूरः मायदा; सूरःनूर)

अगर यह फर्ज अदा हो गया तो उस के सर से जिम्मेदारी उतर गई। सूरः मायदः में फरमाया :–

तर्जुमा "ऐ ईमान वालो ! तुम पर अपनी जान की फिक्र लाजिम है। तुम अगर सीधे रास्ते पर हो तो जो कोई भटका वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ता।"

हजरत अबू बक्र सिद्दीक रजि० ने इस आयत को पढ़कर लोगों से कहा, "लोगो! तुम को इस आयत के जाहिरी मानी धोखे में न डालें कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह कहते सुना है। अगर जालिम को जुल्म करते लोग देखें और फिर उस के दोनों हाथ पकड़ न लें तो हो सकता है कि वह सब के सब अज़ाब में गिरिफ्तार हो जाएं। एक दूसरे सहाबी अबू सुअल्बा रज़ि० से इस आयत के मानी पूछे गये तो जवाब दिया कि मैंने खुद आंहजरत सल्ल० से इस आयत के मानी दरयाफत किया तो फरमाया कि "नहीं बल्कि नेकी का आपस में हुक्म करो और बदी से एक दूसरे को रोको लेकिन जब देखो कि हिर्स और बुख्ल (कंजूसी) का अनुसरण (इताअत) है और मन की पैरवी है और दुनिया को दीन पर तरजीह (प्राथमिकता) दी जा रही है और हर एक अपनी राय पर आप मगरूर है तो उस वक्त अवाम (जनता) को छोड़ कर अपनी खबर लो कि तुम्हारे बाद वह जमाना आने वाला है जिस में साबित कदम रहना लपट को हाथ से पकड़ना है।"

इन तालीमात ने अखलाक के इस गलत उसूल को कि "क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं? निरस्त कर दिया। सच्चाई यह है कि जब तक अखलाकी तालीमात को जमाअत अपने हाथ में नहीं रखेगी, इन की हिफाजत नहीं हो सकती। कौमों के रीति–रिवाज और एटीकेटस (आचरण) इसी उसूल पर कायम हैं। दूसरी बात यह है कि वाहय रूप से हर व्यक्ति के प्राइवेट और निजी बातें मालूम होती हैं जिन का नफा नुकसान करने वाले की जात तक सीमिति है। मगर तनिक पैनी नजर से देखिये तो मालूम हुआ कि इन का असर पूरी सोसाइटी पर पड़ता है। इनका असर एक से दूसरे तक और दूसरे से तीसरे तक पहुंचता है और इसी तरह धीरे–धीरे पूरी सोसाइटी में फैल जाता है। दूसरे यह कि अगर इन की रोक थाम की गई तो इन बुराइयों की बुराई बहुत हल्की होकर रह जाती है और लोग इस को एक मामूली बात समझने लगते हैं और धीरे–धीरे यह जहर इतना फैलता है कि इन बुराइयों का बुरा होना भी सन्देह प्रद (मशकूक) मालूम होने लगता है और फिर इसका नतीजा यह होता है कि कुछ दिनों में पूरी कौम का मिजाज फासिद हो जाता है और वह अपने स्तर से नीचे गिर जाती है। तिरमिजी में है कि एक दफा आंहजरत सल्ल० ने सहाबः की मजलिस में फरमाया कि "बनी इस्राईल में नैतिक पतन इस प्रकार शुरू हुआ कि जब उन में बुराई फैलने लगी तो पहले उन के धर्म गुरूओं ने मना किया लेकिन जब वह न रूके तो वह उन के साथ बैठने उठने और खाने पीने लगे। संगत के असर से वह भी ऐसे ही हो गये। अल्लाह ने दाऊद और ईसा अ० की मारफत उन पर लानत की।" इस के बाद आप सल्ल० संभल कर बैठ गये और फरमाया, "नहीं ! जब तक तुम जालिम का हाथ न पकड़ो और उस को हक पर न झुका दो।"

इस की चन्द शर्तें :

लेकिन यह अच्छी बातों के लिए कहना और बुरी बातों से रोकना हर जाहिल व आमी (आम आदमी) का फर्ज नहीं है क्योंकि अगर ऐसा हो तो वह इस के बहाने से फितना व फसाद पैदा कर देगा। यह हक सर्व प्रथम उसी

व्यक्ति को हासिल है जो खुद उन बुराइयों से बचा है। कुर्आन ने कहा –

तर्जुमा " *क्या तुम दूसरों को नेकी का हुक्म देते हो। और खुद अपने को भूल जाते हो।*" (सूरः बक्रः५)

इसी तरह यह जरूरी है कि नसीहत और फहमाइश अच्छे ढंग से नर्मी और मसलहत के साथ की जाय। खुद आंहजरत सल्ल० से फरमाया गया, "तू अपने रब के रास्ते की तरफ दानाई (समझदारी) और अच्छी नसीहत से बुला।" (सूरः नहल रूकू १६)

हजरत मूसा और हारून अ० को फिरऔन के पास भेजा गया तो कह दिया गया, "तुम दोनों उस से नर्मी से बातें करना," (सूरः ताहा रूकू २) एक और जगह तालीम दी गयी, "और तू उन को नसीहत कर और उनसे कह उन के दिल तक पहुंच जाने वाली बात।" (सूरः निसा रूकू १)

यह तमाम एहतियातें और ताकीदें इस लिये हैं कि लोगों में जिद (हठ) और कीना (द्वेष) न होने पाये और नेकी के बजाय बुराई का अन्देशा न पैदा हो जाय।

अमन व अमान का काइम रखना, इमाम के हाथ में है। इस लिए अम्र बिल मारूफ और नहीं अनल मुनकर के ऐसे फौजदाराना और जबरदस्ती के तहककुमाना इन्तेजामात जिन के लिए तनकीदी कूवत दरकार है, सिर्फ हुकूमत का फर्ज है। ताकि ऐसा न हो कि एक बुराई के रोकने के लिए दूसरी किस्म की बीसियों बुराइयां हो जायें।

टोह और ग़ीबत की मनाही

यंह बात कि अम्र बिल मारूफ और न ही अनलमुलकर का असल मकसद सोसाइटी का सुधार और जमाअत की अखलाकी हिफाजत है। इस से स्पष्ट होता है कि इस्लाम में दूसरों के व्यक्तिगत अवगुणों (बुराइयों) की टोह में रहने या टोह लगाने की मनाही की है। किसी मुसलमान को यह हक हासिल नहीं कि वह किसी दूसरे मुसलमान के घर घुस कर उस की हालत व कैफियत की टोह औरा जुस्तजू (तहकीक व तफतीश) करे, यहां तक कि इस्लाम के लिट्रेचर का यह आम मुहाविरा बन गया है "मुहतसिब रा दरूने खानः चे कार?"

इस का सबब (कारण) यह है कि सुधार के इस तरीकः से फितना व फसाद का दरवाजा खुल जाता है और कोई व्यक्ति अपने घर मे भी सुरक्षित न रहता। लेकिन इस की मनाही का असल भेद यह है कि जो व्यक्ति घर में छुप कर कोई बुरा काम करता है उसका असर सिर्फ उस की ज़ात तक सीमित रहता है, जमाअत तक उसका असर नहीं पहुंचता इस लिए जमाअत को इस में दखल देने की जरूरत नहीं। और इसी के साथ एक और बिन्दु यह है कि उस में शर्म व हया का जौहर अभी मौजूद है जो मुमकिन है कि आगे चलकर उसकी हिदायत का सबब बन जाय, लेकिन लोग अगर उस को छुप–छुप कर देखते फिरें तो डर है कि ज़िद और हट की तेज हवा से उस के दिल की यह घुंघली रौशनी भी गुल न हो जाय। इस्लाम में किसी के घर या कमरे में बे इजाजत प्रवेश की जो मनाही है उस का कारण भी यही है। जैसा कि खुद आंहजरत सल्ल० ने इस को जाहिर फरमाया दिया है, कि " किसी के घर में दाखिला की इजाजत मांगना इसी लिये है कि वह उस को न देखे।"

इस सिलसिले में एक और उसूल यह है कि उस की गीबत न की जाये, अर्थात् उस की बुराई उस के पीछे दूसरों से न की जाये कि यह इस्लाह (सुधार) की तदबीर नहीं, बल्कि मुमकिन है कि उस को जब यह मालूम हो तो नसीहत करने वाले की तरफ से उसको मलाल हो और उस में मुखालिफत की जिद पैदा हो जाय और फिर उसकी इस्लाह का दरवाजा हमेशा के लिए बन्द हो जाय। कुर्आन में इरशाद है :–

तर्जुमा "ऐ ईमान वालो ! बहुत सारे गुमानों से बचते रहो, कि बेशक बाज गुमान गुनाह है और न किसी का अन्दर का टटोला करो और न पीठ पीछे किसी को बुरा कहो। भला तुम में से कोई यह पसन्द कर सकता है कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाये। सो तुम को घिन आये। अल्लाह से डरो। बेशुबह अल्लाह माफ करने वाला मेहरबान है।" (सूरः हुजरात रूक २)

पीठ पीछे किसी की बुराई करना ऐसा ही है जैसे किसी मुर्दा लाश का गोश्त अपने दांतों से नोचना कि जिस तरह मुर्दा अपने इस जिस्म (शरीर) की हिफाजत नहीं कर सकता, वह भी जिस को तुम उस की गैर हाजिरी में बुरा कह रहे हो, अपने इल्जाम का बचाव नहीं कर सकता। इस गीबत की मिसाल ऐस नफरत के काबिल काम से जिस से हर इन्सान की स्वभावतः घिन आ जाय, इस से अधिक अलंकारिक (बलीग) नहीं हो सकती। इस की कराहत की यह शिद्दत इसी लिए इख्तियार की गयी है कि इस तरीकः से अम्र बिल

(शेष पृष्ठ २० पर)

तेइसवीं किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

सुल्तान अहमद प्रथम

सुलतान मुहम्मद के बाद उसका बड़ा बेटा अहमद चौदह वर्ष की उम्र में बादशाह हुआ। सलतनत की हालत पहले ही से खराब थी। शाह अब्बास फौजें लिए बढ़ा चला आ रहा था। देश के अन्दर झगड़े फसाद हो रहे थे लेकिन ख़ुदा के फ़ज़्ल से वज़ारत मुराद पाशा के हाथ में आ गई जो बहुत ही योग्य और समझदार था। उस के प्रयास से अंदर के झगड़े मिटे देश में शान्ति काइम हुई। आस्ट्रिया से हंग्री की हुकूमत मिली। अब्बास की भी प्राजय हुई लेकिन सुलहनामा न हो पाया था कि मुराद पाशा का देहान्त हो गया और नसूह पाशा उस के अस्थान पर वजीर हुआ। उस ने बहुत नर्म शर्तों पर मामला तय कर लिया जिस से तुर्की की हानि हुई १०२६ हि० में सुलतान मुहम्मद का देहान्त हो गया। चूंकि शाहजादा उसमान की उम्र बहुत कम थी, इस लिए अपने भाई मुसतफा के लिए वसीयत कर गया।

सुलतान मुसतफा प्रथम

भाई की वसीयत के अनुसार मुसतफा बादशाह बनाया गया। लेकिन उसकी सारी उम्र महल में औरतों के साथ गुजरी थी, अतः बहुत ही मूर्ख और सलतनत के कामों से बिल्कुल अनजान था। यह हाल देख कर तीन ही महीने बाद सरदारों ने उसे तख्त से उतार कर शाहजादा उसमान को बादशाह बना दिया।

सुलतान उसमान द्वितीय

उसमान के तख्त पर बैठते ही बोलोनिया के सरदार ने शरारत शुरू की। उसमान खुद फौज लेकर गया लेकिन इनकशारिया (नौ मुस्लिम इस्लामी फौज) ने लड़ने से इनकार कर दिया और तुर्कों की प्राजय हुई। मजबूरन उसमान सुलह कर के वापस आ गया लेकिन इनकशारिया की इस शरारत से सख्त नाराज था। चुनानचि उस ने नई फौज भरती की और जब वह ठीक हो गई तो इनकशारिया को निकालना शुरू किया। इस पर उन्होंने बगावत कर दी और ६ रजब १०३१ हि० को सुलतान मुसतफा को दोबारा तख्त पर बैठाया। उसमान को घसीटते और गालियां देते हुए लाए और किले के सामने कत्ल कर डाला। इस गड़बड़ में देश का प्रबन्ध खराब हो गया। जगह जगह अमीरों और सरदारों ने खुद मुख्तारी (स्वतंत्रता) का एलान कर दिया। खुद कुसतुनतुनिया में डेढ़ वर्ष तक लूटमार होती रही। आखिर में अली पाशा प्रधान मंत्री हुआ तो उस की कोशिश से शान्ति स्थापित हुई। मुसतफा तख्त से उतारा गया और १०३२ हि० में सुलतान अहमद का तीसरा बेटा मुराद बादशाह बनाया गया।

सुलतान मुराद चतुर्थ

तख्त पर बैठते समय मुराद की उम्र १४ साल की थी, इसी लिए कुछ दिनों तक सारा प्रबन्ध मंत्रियों के हाथ में रहा। इनकशारी फौज का हाल तो पढ़ चुके हो ठीक लड़ाई के समय इंनकार तो किया ही करते थे, अब उन की हिम्मत यहां तक बढ़ी कि खुद सुलतान के सामने प्रधानमंत्री को कत्ल कर दिया। मुराद को उस की हरकत पर क्रोध आया। उसने प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया और थोड़े ही दिनों में उन की शक्ति तोड़ दी।

बग़दाद ईरानियों के कब्जे में चला गया था सुलतान मुराद ने उसे वापस लिया। बोलोनिया की बगावत समाप्त की और अगर कुछ और जिन्दगी रहती तो मुराद तुर्कों को फिर इंतिहाई उन्नति पर पहुंचा देता लेकिन अफसोस १०४९ हि० में केवल ३० साल की उम्र में उसका देहान्त हो गया।

सुलतान इबराहीम

भाई के मरने के बाद बादशाह बनाया गया। यह पागल सा आदमी था। दिन रात खेल कूद और मूर्खता की बातों में लगा रहता था। यह देख कर इनकशारिया ने फिर जोर पकड़ा और इब्राहीम ने उन के सरदारों को कत्ल करना चाहा लेकिन उन्होंने खुद उस को तख्त से उतार दिया और सन् १०५३ हि० में उस के सात वर्ष के बच्चे को तख्त पर बैठाया।

सुलतान मुहम्मद चतुर्थ

सलतनत का प्रबन्ध पहले से ही खराब था। मुहम्मद की कमसिनी

के कारण और भी खराबी फैली और अन्दर व बाहर हर जगह वह ऊधम मचा कि खुदा की पनाह। वह तो अल्लाह ने खैर की मुहम्मद पाशा कोपरीली सदरे आजम (प्रधानमंत्री) हो गया अन्यथा सलतनत के जाने में कोई कसर न रह गई थी। मुहम्मद पाशा ने इनकशारी फौज को क़ाबू में किया, रूमी बतरीक़ को, जिस की शरारत से वेनिस ने हमला किया था, फांसी फिर वेनिस के जंगी जहाजों को प्राजित करके भगा दिया और सारे मुकामात छीन लिय। ट्रांसलोनिया और रोमानिया को दबा दिया।

सन् १०६२ हि० में इस योग वजीर का देहान्त हो गया। उस के बाद उस का बेटा अहमद पाशा कोपरीली मंत्री हुआ। उस ने भी बाप की तरह सारा प्रबन्ध ठीक रखा १०८७ हि० में उस का भी देहान्त हो गया और उस का बहनोई क़मर मुसतफा मंत्री बना। उस के जमाने में भी हालत अच्छे रहे लेकिन संयोग से आस्ट्रिया के मुकाबले में हार गया। उस पर सुलतान ने अप्रसन्न होकर उसे हटा दिया और उस की जगह पर इब्राहीम पाशा को वजीर बना दिया लेकिन उस में वह बात कहां थी नतीजा यह हुआ कि आस्ट्रिया ने हंग्री वापस ले लिया। वेनिस ने मूरह पर कब्जा कर लिया। यह देख कर सुलतान ने सुलैमान को मकर्रर किया। मुसलमानों ने बूडापेस्ट पर चढ़ाई की लेकिन सफलता न मिली। अब सुलतान ने सियाऊश पाशा को मुकर्रर किया लेकिन फौज उस से नाखुश थी। इस लिए बगावत कर दी। सुलतान मुहम्मद सैर व शिकार में लगा हुआ था और सलतनत से बिलकुल लापरवाह था। इस लिए मुफती के फतवे पर सन् १०६६ हि० को वह तख्त से उतारा गया और उसकी जगह उस का भाई सुलैमान बादशाह बनाया गया।

सुलतान सुलैमान द्वितीय

फौज ने बड़ा ऊधम मचाया था। हर जगह लूट मार हो रही थी। सुलैमान ने बड़ी मुशकिल से किसी तरह उसे काबू में किया। इस गड़बड़ में आस्ट्रिया ने बलग़ारिया फतह कर लिया। सुलतान ने मुहम्मद पाशा कूपरेली के पोते मुसतफा पाशा को वजीर बनाया। मुसतफा ने सब से पहले फौज को काबू में किया फिर बाहर मुकाबले के लिए निकला और दुश्मनों को प्राजित कर सलतनत का रोब फिर से काइम किया।

सन् ११०२ हि० में सुलतान सुलैमान द्वितीय का देहान्त हो गया। यह बड़ा नेक, इल्मदोस्त और उपासक व भक्त था यहां तक कि शुरू में सलतनत तक से इन्कार कर दिया था। बड़ी मुश्किलों से लोगों ने राजी किया।

अहमद द्वितीय मुसतफा द्वितीय

सुलतान सुलैमान की औलाद न थी। इसलिए उस का भाई अहमद तख्त पर बैठा। उस के जमाने में कोई खास बात न हुई सिवाए इस के साक़ज द्वीप पर वेनिस का कब्जा हो गया। ११०६ हि० में उस का देहान्त हो गया। उस के बाद सुलतान मुहम्मद चतुर्थ का बेटा मुसतफा द्वितीय तख्त पर बैठा। यह बड़ा बहादुर था। खलीफा होने के तीसरे ही दिन बोलोनिया पर चढ़ाई कर दी। कई मुकामात छीन लिये। पीटर आजम (रूस का बादशाह) अज़ाक़ को फतह कर के श्वेत सागर में रूस का बंदरगाह बनाना चाहता था। सुलतान मुहम्मद ने वहां से उसे हटा दिया। फिर हंग्री पर हमला किया और उसे भी प्राजित किया। सन् ११०७ हि० में आस्ट्रिया को भी हराया परन्तु संयोग से आस्ट्रिया का सेनापति ओचीन ने अचानक हमला कर दिया जिस से तुर्कों की काफी हानि हुई। उन के बड़े बड़े सरदार यहां तक कि प्रधानमंत्री भी मारा गया। पीटर ने सुलतान को उधर फंसा देखकर अजाक पर कब्जा कर लियां आखिर १११० हि० में तुर्की का रूस, बोलोनिया, आस्ट्रिया और वेनिस के साथ अहदनामा (प्रतिज्ञा पत्र) हुआ। इसमें तय पाया कि हंग्री और ट्राशोलेनिया आस्ट्रिया को, यूक्रेन बोलोनिया को अज़ाक रूस को मोड़ह और डलमेसिया वेनिस को दिये जायें और आगे आस्ट्रिया तुर्कों को कोई खिराज (राजस्व कर) नहीं देगा।

इस प्रतिज्ञा पत्र से तुर्कों को बहुत नुकसान पहुंचा। उसके बाद तुर्कों का रोब जाता रहा। यूरोप के राज्यों ने आपस में तय किया कि तुर्कों को न केवल यही कि आगे बढ़ने से रोका जाए बल्कि उन को यूरोप से निकाल दिया जाये ताकि इस्लाम ईसाइयों के मुकाबले में बाकी न रह सके। हसीन पाशा कूपरेली प्रधानमंत्री था। उस ने हालात संभालने के लिए मुल्क का प्रबन्ध ठीक करना शुरू किया। हसीन पाशा की तत्परता से आशा बन्ध चली थी कि थोड़े ही दिनों में तुर्क फिर उन्नति करेंगे लेकिन शैखुल इस्लाम फैजुल्ला आफन्दी को बिला वजह ऐसी दुश्मनी हो गई कि उसे निकाल कर

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : तअ़जिया दारी का क्या हुक्म है?

उत्तर : रंगीन काग़ज़, बांस, तान्त की मदद से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ख़ूबसूरत ढांचे बनाए जाते हैं जिन को करबला (वाक़िअ़ इ़राक़) में बने ह़ज़रत ह़ुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मक़बरे के मुशाबिह बनाते हैं। उस के अन्दर दो फ़र्ज़ी कबरें भी बनाते हैं। फिर उस को ६ मुहर्रम की शाम को एक ख़ास जगह पर रख कर उस की ज़ियारत करते हैं। उस के गिर्द चिरागां करते हैं उस पर चढ़ावे चढ़ाते हैं। फिर दस मुह़र्रम को बाजे गाजे के जलूस के साथ उसके मुतअ़य्यन, दफ़्न की जगह, जिसे करबला कहते हैं ले जाकर दफ़्न करते हैं। अक्सर जगहों पर इस जुलूस में मर्सिया ख़्वानी, नौह़ा ख़्वानी और मातम भी होता है। इस रस्म को तअ़जियादारी कहा जाता है। यह तअ़जियादारी नाजाइज़ है, ह़राम है। इस के ह़राम होने में बरेलवी, देवबन्दी आ़लिमों में कोई इख़्तिलाफ नहीं है। जनाब मौलाना अह्मद रज़ा खां साह़िब का तो तअ़ज़िया दारी पर एक किताब्चा ही है, मौलाना अमजद अ़ली साह़िब ने बहारे शरीअ़त में इस को खुल कर नाजाइज़ कहा है। अहले सुन्नत वल्जमाअ़त के तमाम उ़लमा ने तअ़ज़ियादारी को नाजाइज़ कहा है। जिन लोगों ने इस को बिदअ़त कहा है उन्होंने भी इसे बिदअ़ते सय्यिअः (बुरी बिदअ़त) कह कर रोका है और बअ़्ज़ जगह तो इस से मन्नत मानते हैं, इस पर चढ़ावा चढ़ाते हैं यह बातें तो शिर्क तक पहुंचती हैं लिहाज़ा इस तअ़ज़ियादारी से बचना ज़रूरी है। हम इख़्तिलाफ़ी मसाइल से बचते हैं लेकिन तअ़ज़ियादारी मसअले में चूंकि बरेलवी व देवबन्दी सभी उ़लमा मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं इस लिये लिख दिया अगर्चि यह जवाब तअ़्ज़ियादार अ़वाम के जज़्बात के ख़िलाफ़ है मगर हम उन से दरख़्वास्त करते हैं कि अगर वह आख़िरत का भला चाहते हैं तो उ़लमा की बात मान लें।

प्रश्न : बअ़्ज़ लोग ह़ज़रत ह़ुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मौक़िफ़ पर तन्क़ीद करते हैं इस बारे में कुछ समझाइये।

उत्तर : मेरे नज़दीक ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) के मौक़िफ़ को ग़लत बताने वालों का माक़िफ़ खुद ग़लत है। ह़ज़रत ह़ुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु सह़ाबीए रसूल हैं, नवास–ए–रसूल (अ़०) हैं। जन्नत की ख़ुशख़बरी पाए हुए हैं उनके मौक़िफ़ से इख़्तिलाफ़ का ह़क़ किसी ग़ैर सह़ाबी को नहीं। हमारे नज़दीक वह सद फ़ीसद ह़क़ बजानिब थे, उन्होंने यज़ीद की ख़िलाफ़त से इख़्तिलाफ़ किया ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि०) ने सियासी व दीनी मस्लह़तों से यज़ीद को वली अ़हद बनाया उन का मौकिफ़ भी सह़ीह़ था, ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र, ह़ज़रत ह़ुसैन बिन अ़ली, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इख़्तिलाफ़ किया इन सब का मौकिफ भी सहीह था, हम को कोई हक नहीं कि हम सहाब–ए–किराम (रजि०) के इख्तिलाफात में हकम बनें। हम तो दोनों को हक पर मानेंगे। अब इन में अल्लाह के नजदीक जिससे चूक हुई होगी उस को भी एक सवाब मिलेगा और जो पूरी तरह ह़क़ पर होगा वह दुहरे सवाब का मुस्तहिक होगा। हजरत मुआविया रजियल्लाहु अन्हु ने अपनी वफात के वक्त यजीद को जो वसीयत लिखवाई वह हजरत हुसैन (रजि०) के साथ अच्छे सुलूक की वसीयत थी। हजरत मुआविया (रजि०) की वफात के बअद यजीद ने अपनी खिलाफत की बैअत ली उस वक्त हजरत हुसैन (रजि०) मदीना तय्यिबा में थे उन से बैअत का मुतालबा हुआ उन्होंने इन्कार कर दिया उनका यह मौकिफ भी सद फीसद सहीह था। यजीद के लिय भी मुश्किलात थीं न उस में इतना जुहद व तक्वा था कि वह खिलाफत से दस्त बरदार हो जाता न ही सियासी तौर पर यह उस के लिए आसान था।

हजरत हुसैन (रजि०) मदीना तय्यिबा से मक्का मुकर्रमा चले गये, हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने भी बैअत से इन्कार किया और वह भी मक्का मुकर्रमा चले गये। ऐसा दिल कहता है कि हजरत हुसैन और हजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर मुत्तफिक हो कर मक्का मुकर्रमा में एक हुकूमत की बुन्याद डालते तो काम्याब होते और वह मिसाली हुकूमत होती लेकिन मुझ को

लगने से क्या होता है अल्लाह तआला की मर्ज़ी तो कुछ और थी। बे वफ़ा कूफ़ियों नें क़ासिद भेज भेज कर और ढेरों ख़ुतूत भेज भेज कर ह़ज़रत ह़ुसैन को कूफ़ा की जानिब रवानगी पर मजबूर कर दिया। ह़ालात का जाइज़ा लेने के लिए ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) ने अपने चचा ज़ाद भाई मुस्लिम बिन अक़ील को भेजा, कूफ़ियों ने पुरजोश इस्तिक़्बाल किया। १८००० ने ह़ज़रत ह़ुसैन के लिए ह़ज़रत मुस्लिम के हाथ पर बैअ़त कर ली यह ख़बर जब मक्का मुकर्रमा में ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) को पहुंची तो वह रवानगी के लिए तैयार हो गये। कई सहाबा ने हमदर्दी में आप को कूफ़ा जाने से रोका लेकिन ह़ज़रत ह़ुसैन कूफ़ा रवाना हो गये, कूफ़े वालों के ख़ुतूत और क़ासिदों की बुन्याद पर ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) के सफ़र का यह मौक़िफ़ भी सद फ़ीसद सह़ीह़ था, और रोकने वाले हमदर्दों का मौक़िफ़ भी सह़ीह़ था। रास्ते में ह़ज़रत मुस्लिम की शहादत और कूफ़ियों की बेवफाई की खबर पर जो हालत पैदा हुई उन के बावजूद ह़ज़रत के सफ़र जारी रखने के अ़ज़्म का मौक़िफ़ भी ह़क़ था। ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) और उन के साथियों की हमीयत ने यह गवारा न किया कि चचाज़ाद भाई की शहादत के बअ़्द वह बुज़दिलाना पीछे को लौटें या जिन्हें ज़ालिम समझते हैं उनसे इन्साफ़ मांगें। फिर जो कूफ़ी अभी साथ थे वह हिम्मत भी दिला रहे थे, और मुझे ऐसा लगता है ह़ज़रत को अपना और साथियों का मुक़द्दर मक्शूफ़ हो चुका था और वह ज़ाहिरी अस्बाब के साथ रवां दवां थे। ह़ुर और उस के हरावल दस्ते की मुलाक़ात के बअ़्द तो मजबूरियां भी सामने आने लगी। यज़ीदी फौज के सामने इतमामे ह़ुज्जत के तौर पर आपने तीन मुतालबात रखे वह कितने मअ़्क़ूल थे : हम जहां से आए हैं वहीं हम को लौट जाने दिया जाए, या हम को किसी सरह़द की जानिब जाने दिया जाय, या हम को यज़ीद के पास जाकर अपना मस्अला हल कर लेने दिया जाए। मगर बुरा हो उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद का कि उस ने एक न सुनी और आप का घेरा तंग कर दिया। ५००० मुसल्लह फ़ौज के सामने बहत्तर तलवार वालों की ह़ैसियत ही क्या लेकिन इन बहत्तर ने अपने को सिपुर्द करने की ज़िल्लत से बचाया बहादुरी से मुक़ाबला किया और एक एक करके सब ने शहीद होकर हमेशा की ज़िन्दगी ह़ासिल कर ली जिस का एअलान क़ुर्आन में मौजूद है कि "अल्लाह की राह में क़त्ल होने वालों को मुर्दा मत कहो वह तो ज़िन्दा हैं तुम उनकी ज़िन्दगी का शअ़ूर नहीं रखते।"(अल–बक़र:५४)

बअ़्ज़ लोग सुवाल करते हैं कि ऐसी सूरते ह़ाल में यज़ीदी फ़ौज को क्या करना चाहिए था? मैं कहता हूं कि उन तीन मुतालबात में से किसी एक को मान लेना चाहिए था। या फिर उन को घेरे रहते और उन के मरतबे का लिह़ाज़ करते हुए उनको खाना पानी मुहय्या करते रहते चाहे इस में सालों गुज़र जाते । लेकिन जो मौक़िफ़ ज़ालिम उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने अपनाया वह गुमराही का मौक़िफ़ था। यज़ीद भी इस जुर्मे अ़ज़ीम से बच नहीं सकता वह कितना ना अहल था कि सह़ाबिये रसूल और नवास–ए–रसूल की ह़िफाज़त न कर सका।

अहले बैत ख़ुसूसन ह़ज़रत ह़सन और ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) की मह़ब्बत हर मुसलमान के लिए लाज़िमी है और यज़ीद के मुक़ाबले में उन के मौक़िफ़ को ह़क़ जानना ज़रूरी है। लेकिन इस मह़ब्बत व तअ़ल्लुक का इज़्हार उन की इताअ़त उन के लिए दुआ़ए मग़फ़िरत, उन के लिए ईसाले सवाब, उन को अच्छे कलिमात से याद करने और इस्लाम की ह़िमायत करने से होगा न कि इस्लाम मुख़ालिफ तअ़्ज़ियादारी, अ़लम, नौह़ा, मातम और मुह़र्रमी बाजों से होगा।

Mob. 9335384273
0522-2005079
2273297
Noor Ahmad
Prop.
Haji Noor Ahmad Jewellers
143/75, Joote Wali Gali,
Behind Mumtaz Market,
Aminabad, Lucknow

Mob. 9935316659
9235849619
STAG INDIA
Dealer Supplier
Ultra Modern Armscovers, Belt, Sting, Bag Toy Air Rifle, Toy Air Pistol, Clearing Implements & All Kinds of Gun Acessories.
9, LATOUCHE ROAD,
LUCKNOW-226018, U.P. (India)

आजमाईश का मापदण्ड

अब्दुर्रशीद खैरानी

इस संसार में सफलता और भलाई और खुशहाली का मापदण्ड दुनिया का माल व इज्जत का होना समझा गया है। लोग यह समझते हैं कि दुनिया का खुशहाल शख्स अल्लाह के नजदीक प्रिय होता है मगर यह सोच एकदम ही गलत है। इस दुनिय में जो भी माल, दौलत, पद और औलाद किसी इन्सान को प्राप्त है वह उस की आजमाईश के लिए होता है। अल्लाह तआला अपने बन्दों की आजमाईश विभिन्न तरीकों से करता है। किसी की आजमाइश धन दौलत व खुशहाली देकर करता है और किसी को मुसीबत व गरीबी में डालकर आजमाता है। जो बन्दा इस आजमाईश में खरा उतरता है उसी को आखिरत की कामयाब जिन्दगी अता होती है।

अल्लाह तआला अपनी किताब कुरआन मजीद की सूरः अलमोमिनून की आयत पचपन छप्पन में फरमाता है–

५५–५६– क्या ये समझते हैं कि हम जो माल और औलाद से इनकी मदद दिए जा रहे हैं तो मानो इन्हें भलाइयां दे रहे हैं? नहीं असल मामले का इन्हें इल्म (ज्ञान) नहीं है।

५७. वास्तव में तो जो लोग अपने रब के डर से डरने वाले होते हैं। ५८. जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं।

५६. जो अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते।

६०. और जिनका हाल यह है कि देते हैं जो कुछ भी देते हैं और दिल उनके इस विचार से कांपते रहते हैं कि हमें अपने रब की ओर पलटना है।

६१. वही भलाइयों की ओर दौड़ने वाले और पहल करके उन्हें पा लेने वाले हैं।

इसी तरह सूरः कहफ की आयत ४६ में फरमाता है : माल और औलाद दुन्यवी जिन्दगी की रौनक है और बाकी रहने वाली नेकियां तुम्हारे रब के नजदीक सवाब के लिहाज से बेहतर है।

अल्लाह तआला अपने बन्दों को यह बता रहा है कि दुनिया की जिन्दगी में माल, दौलत, मकान, पद और खुशहाली किसी की सफलता और अल्लाह की तरफ से भलाई का द्योतक नहीं है बल्कि यह सब आजमाइश की चीजें हैं। यह सब चीजें खत्म हो जाने वली हैं। ये दुनिया की रौनकें हैं जो हमेशा रहने वाली नहीं है मगर यहां एक और चीज है जो हमेशा रहने वाली जिन्दगी की खुशहाली दिलाने वाली है वो इन्सान के नेक आमाल हैं। जिस तरह जमीन में बीज डालने से फलों व फूलों के पौधे निकल कर एक बागीचा तैयार होता है उसी तरह अल्लाह की याद और अल्लाह तआला और उसके पैगम्बर हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फरमाबरदारी और अनुसरण से भी अल्लाह तआला के यहां एक बाग तैयार होता है जिस बाग पर कभी कोई आफत नहीं आती। यह बाग आखिरत में अल्लाह तआला की जन्नत में तैयार होता है जो अपने उगाने वाले को मिलेगा।

सूरः कहफ की आयत १०३–१०४ में फरमान है –

"कहो, क्या मैं तुम्हें बता दूं कि अपने आमाल के एतबार से सबसे ज्यादा घाटे में कौन लोग हैं? वे लोग जिनकी कोशिश दुनिया की जिन्दगी में अकारत (व्यर्थ) हो गयी और वे समझते रहे कि वो बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की निशानियों का और उससे मिलने का इन्कार किया। बस इनका किया हुआ बरबाद हो गया फिर कयामत के दिन हम उनको कोई वजन न देंगे, यह जहन्नम उनका बदला है इसलिए कि उन्होंने इन्कार किया और मेरी निशानियों और मेरे रसूलों का मजाक उड़ाया।

इन्सान इस दुनिया की खुशहाली और मालदारी पाने के लिए भरपूर कोशिश करता है और इस कोशिश में इतना गुम हो जाता है कि अल्लाह तआला की याद व फरमाबरदारी के लिए समय ही नहीं निकाल पाता है। आखिरत को भूलकर इस दुनिया की जिन्दगी की कामयाबी के लिए जीतोड़ मेहनत करता है जो कि यथार्थ में व्यर्थ और खत्म होने वाली जिन्दगी होती है। दुनिया की इस कामयाबी की अल्लाह के यहां कोई कीमत नहीं है और न ही कोई अच्छा बदला है। इस दुनिया की जिन्दगी की रौनकों व खुशहाली व तरक्की की

कोशिशों में अपने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफरमानी करने वालों के लिए आखिरत में सिर्फ घाटा ही घाटा होगा जबकि इस दुनिया में अपनी जिन्दगी अल्लाह तआला और उसके सच्चे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फरमाबरदारी में गुजारने वाले लोग ही अस्ल कामयाब और सफलता पाने वाले लोग हैं।

इसी तरह कुरआन मजीद की सूरः कसस की आयत ६०–६१ में फरमान है।

और जो चीज भी तुमको दी गई है तो वह बस इस दुनिया की जिन्दगी का सामान है और इस की रौनक है और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है और बाकी रहने वाला है फिर क्या तुम समझते हो। भला वह शख्स जिससे हमने अच्छा वायदा किया फिर वह इस को पाने वाला है क्या उस शख्स जैसा हो सकता है जिसको हमने सिर्फ दुनिया की जिन्दगी का फायदा दिया है और फिर कयामत के दिन वह हाजिर किये जाने वालों में से हैं।

इस दुनिया में आदमी के पास कितना ही ज्यादा साज व सामान हो, हर हाल मौत के वक्त यह सब आदमी का साथ छोड़ देते हैं। मौत के बाद जो चीज आदमी के साथ जाती है वो इसके नेक व अच्छे आमाल (कर्म) हैं।

अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताए मुताबिक दुनिया में अपनी जिन्दगी बिताने वाला शख्स ही कामयाब शख्स है। रोजी कमाने में हलाल तरीके अपना कर दौलत कमाना और फिर उसे अल्लाह तआला की राह में खर्च करते रहना अल्लाह तआला को पसंद है। अल्लाह तआला की दी हुई नेअमतों को पाकर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते रहना चाहिए। घमण्ड, दिखावा और नाफरमानियों से बचकर लोगों के लिए नफाबख्श (लाभप्रद) बनकर रहने वाला शख्स इस दुनिया में भी सफल व कामयाब है और आखिरत में हमेशा रहने वाली जिन्दगी में भी कामयाब रहेगा।

(पृष्ठ २१ का शेष)

बेगम का रिश्ता किसी दूसरी जगह कर चुके थे।

६. शरीअत की रू से आक बेटा वरासत से महरूम (वंचित) नहीं हो सकता मगर मिर्जा ने बार–बार उसे वरासत से महरूम करने का जुर्म किया।

७. तहजीब व अखलाक को खैरबाद कह कर बेटे को मजबूर किया कि वह अपनी बीवी को बे सबब तलाक दे।

८. मअलूम हुआ कि सारे इलहामात ढकोसले थे, वास्तव में एक नफसानी ख्वाहिशात को पूरा करने के लिए बड़ी ही कमजोर चालें और तदबीरें मिर्जा जी ने कीं जो एक सच्चे हयादार मुसलमान की शान से भी बईद (दूर) हैं।

इन लालच देने वाले और धमकी देने वाले खतों के बावजूद मुहम्मदी बेगम का निकाह मिर्जा जी से नहीं हुआ वह दूसरे से व्याही गई और वह साहिबे औलाद हुई। दूसरी तरफ मिर्जा के बेटे फज्ल अहमद ने अपनी बीवी को तलाक नहीं दी, मिर्जा जी जिन्दगी भर पेच व ताव खाते रहे और आग बगोला होते रहे, इसी का नतीजा था कि उन्होंने फज्ल अहमद का इन्तिकाल हुआ तो उस के जनाज़े की नमाज न पढ़ी।

पाठकों ने मअलूम कर लिया होगा कि मिर्जा किस टाइप के आदमी थे। तअज्जुब भी है और अफसोस भी कि नादान लोग ऐसे आदमी को मसीह व महदी बल्कि नबी व रसूल मानते हैं और उन की उम्मत व जमाअत में शामिल हैं। मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी ने एक औरत को पाने के लिए जो ना जेबा बातें और सतही तदबीरें की हैं एक मअमूली जाहिल मुसलमान भी ऐसी बेहयायी और गैर अखलाकी हरकतें नहीं कर सकता।

●●●

ध्यान दें

अगर आप के महल्ले या कस्बे या गांव में अहमदी मिशन का धोखा दे कर गरीब लोगों को या दीन से नावाकिफ क्वाली फाइड लोगों को कुछ लोग कादियानी लिट्रेचर दे रहे हों तो वहां के लोगों को मुतनब्बिह करें और अपने उलमा के लिखे हुए रद्दे कादियानियत के परचे तकसीम करें।

(पृष्ठ १५ का शेष)

छोड़ा। उस के बाद मुसतफा पाशा वजीर हुआ लेकिन उसे भी शैखुल इस्लाम ने हटवा दिया और रानी पाशा को मुकर्रर कराया जिस ने शैखुल इस्लाम के चार बेटों को बड़े बड़े पद दिये लेकिन फौज प्रसन्न न थी मगर सुलतान ने उसे न हटाया नतीजा यह हुआ कि फौज ने खुद सुलतान को हटा दिया।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

विचार बिन्दु

सैलानी की डायरी से

मो० हसन अन्सारी

३१ अक्टूबर २००६ : शाम का वक्त। सूरज डूब चुका है। मगरिब की अजान की आवाज कालोनी में दाखिल होते ही थकेमान्दे सैलानी के कान में पड़ी तो सहज ही उसके मुंह से निकलाः

"मुअज़्ज़िन मरहबा, बरवक्त बोला,

तेरी आवाज मक्के और मदीने।"

सैलानी कालोनी के जिस मकान में पहुंचकर नमाज पढ़ना चाहता था वह बन्द मिला। बाजू में लामा जी का मंकान था। घर वालों ने बताया कि आप के बेटे कही गये हैं उन्हें फोन कर देते हैं यह आ जायेंगे तब तक आप हमारे मेहमान हैं, बैठें। फ्रेश होलें। चाय पी लें। यह हमारा अहोभाग्य है। सैलानी ने कहा, "हम टायलट जायेंगे

वजू करेंगे, नमाज पढ़ेंगे। यह क्या नमाज का नाम सुनते ही, लामा जी के परिवार में खुशी की, अदब व एहतराम की लहर सी दौड़ गयी, आवाजें धीमी पड़ गयीं। घी के दो दिये जलाये गये। बिजली चली गयी थी। आसनी (जा नमाज) बिछा दी गयी। जब तक सैलानी ने नमाज पढ़ी, पूरा परिवार अबद से घर में खामोश बैठा रहा, कोई आवाज नही, कोई चलत फिरत नहीं, कोई काम नहीं। नमाज पूरी हुई। चाय आयी। सैलानी ने चाय पी। लामा जी का परिवार अपने को खुशनसीब समझकर गौराम्वित हो उठा। फूले न समाया। इतने में सैलानी का बेटा आ गया। सैलानी सोच रहा था। क्या एक मुस्लिम परिवार में नमाज और नमाजी का ऐसा अदब व एहतराम किया जाता है जैसा आज लामा जी के परिवार ने किया है जो बौद्ध मजहब के मानने वाले हैं ?

6 नवम्बर 2006

सैलानी कानपुर से लखनऊ बस से सफर कर रहा है। शाम का समय है। बस लखनऊ के मज़ाफ़ात (उपनगरी) में पहुंचती है कि अचानक बस के अन्दर कन्डक्टर की आवाज गूंज उठती है "पैसे वालो। पैसा मांगो।"सैलानी चौंक पड़ा। कन्डक्टर लखनवी मालूम होता है। पैसे वालो तो दौलत मन्द लोग होते हैं, धनवान होते हैं, मालदार क्या पैसा मांगता है? क्या वह मंगता होता है? कैसा विरोधाभास है? मुसाफिरों में से जिन्होंने सौ–पचास के नोट कन्डक्टर को दिये थे अपना टिकट उस तक पहुंचाते रहे। वह उन्हें पैसे वापस करता रहा। और रह रह कर यह जुमला (वाक्य) दोहराता रहा, "पैसे वालो ! पैसा मांगो।"

हमारे समाज की यही स्थिति है यही सूरते हाल है। हर पैसे वाला पैसा मांग रहा है। कोई किसी तरह कोई किसी तरह। काम एक रूप अनेक। कारोबार करने वाले, व्यापारी, किसान, कर्मचारी, मजदूर, अमीर–गरीब सब यही कर रहे हैं। एक तरह की मारामारी है। दो विश्व युद्ध हो चुके हैं, तीसरे की तैयारी है। दुनिया की मार्केट कैपचर कर के अपना सिक्का जमाने के फेर में दुनिय के तमाम विकसित देश इस दौड़ में शामिल हैं। दौलत की एक न बुझने वाली प्यास। कुरआन ने आगाह किया, पर इन्सान दौलत के इस गोरखधन्धे में फंसता ही चला गया और ऐसा फंसा कि सारे नैतिक मूल्यों की छुट्टी कर दी। अब बात बनाये नहीं बनती। कुरआन कहता है : –

तर्जुमा "तुम को माल की लालच ने ग़फ़लत में डाल दिया। यहां तक कि तुम अपनी क़ब्रों में दफन हुए और देख लिया। ऐसे बेफ़िक्र मत रहो बहुत जल्द तुमको मालूम होना है। हरगिज़ तुम को ऐसा नहीं होना चाहिए आगे तुम जान लोगे। अगर तुम को इस तकासुर (लालच) के अंजाम का इल्म होता और इल्म पर यक़ीन होता (तो तुम्हारा यह तरीक़ा न होता)।" (सूरः तकासुर १–५)

लेखकों से अनुरोध है कि वे सरल लिखें, पाठकों से अनुरोध है कि वह सच्चा राही दूसरों को भी पढ़वाएं।

(पृष्ठ १३ का शेष)

मारूफ का फायदा हासिल नहीं हो सकता, और न उस व्यक्ति की, जिस की ग़ीबत की जाय, इस्लाह हो सकती है, और यह कि इस से ग़ीबत करने वाले व्यक्ति की अख़लाकी कमज़ोरी एकदम ज़ाहिर हो जाती है जो एक मुसलमान के ईमान की शान के शायान नहीं इसीलिए आंहज़रत सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि "अगर तुम लोगों की कमज़ोरियों की टोह लगाते फिरोगे तो उन को बर्बाद कर दोगे।" (जारी)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

मुहम्मदी बेगम और मिर्ज़ा

मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी अपनी चचाजाद बहन की बेटी मुहम्मदी बेगम को अपने निकाह में लाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाते है। उन पर वही नाजिल होती है और इलहामात होते हैं कि अल्लाह तआला ने आसमान पर ही मुहम्मदी बेगम का उन के साथ निकाह कर दिया है। मिर्जा जी अपने इलहामात की बहुत तशहीर करते हैं लेकिन मुहम्मदी बेगम के वालिद उन के इलहामात से प्रभावित नहीं होते और निकाह से इन्कार कर देते हैं। मिर्जा जी डराने धमकाने और लालच देने की राह अपनाते हैं ताकि किसी भी तरह यह निकाह हो जाए। अल्लाह तआला ने उनको झूठा साबित कर दिया और मुहम्मदी बेगम का निकाह दूसरी जगह हो गया। यहां मिर्जा जी के वह खुतूत (पत्र) पेश किये जाते हैं जो मिर्जा जी ने इस निकाह के सिलसिले में लिखे। वह मुहम्मदी बेगम की फूफी को लिखते हैं जो मिर्जा की बहू इज्जत बीबी की मां हैं ।

वालिदा इज्जत बीबी को मअलूम हो कि मुझ को खबर पहुंची है कि मुहम्मदी बेगम का निकाह होने वाला है और मैं खुदाए तआला की कसम खा चुका हूं कि इस निकाह से सारे रिश्ते नाते तोड़ दूंगा, इस लिए नसीहत की राह से लिखता हूं कि अपने भाई मिर्जा अहमद बेग को समझा कर यह इरादा रूकवा दो अगर ऐसा नहीं होगा तो आज मैं ने नूरूद्दीन और फज्ल अहमद बेग (मिर्जा का बेटा, इज्जत बीबी का शौहर) को लिख दिया है कि वह इज्जत बीवी का शर्ती तलाक नामा मुझ को भेज दे कि जिस रोज मुहम्मदी बेगम का निकाह किसी और से होगा उसी रोज इज्जत बी को तलाक अगर फज्ल अहमद ने ऐसा न किया तो उस को आक किया जाएगा याद रहे कि मैंने कोई कच्ची बात नहीं लिखी। मुझे कसम है अल्लाह तआला की मैं ऐसा ही करूंगा, खुदाए तआला मेरे साथ हैं जिस दिन निकाह होगा उस दिन इज़्ज़त बीबी का कुछ बाकी नहीं रहेगा।

राकिम मिर्जा गुलाम अहमद लुध्याना इकबालगंज

(खत उर्दू से हिन्दी किया गया और मुकर्रर जुम्ले हटा दिये गये)

मुहम्मदी बेग के वालिद मिर्जा अहमद बेग को लिखते हैं :–

आपकी लड़की मुहम्मदी बेगम से मेरा निकाह आसमान पर हो चुका है और मुझ को इस इलहाम पर ऐसा ईमान है जैसा लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पर, मुझे खुदाए तआला की कसम है कि यह बात अनटल है यअनी खुदा का किया जरूर होगा। मुहम्मदी बेगम मेरे निकाह में आएगी अगर आप किसी और जगह निकाह करेंगे तो इस्लाम की बड़ी हतक होगी क्योंकि मैं दस लाख आदमियों में इस को मुश्तहिर कर चुका हूं, अगर आप नाता न करेंगे तो मेरा इलहाम झूठा होगा और जग हंसाई होगी। जो अम्र (बात) आसमान पर ठहर चुका जमीन पर वह हरगिज बदल नहीं सकता। आप अपने हाथ से इस पेशीनगोई को पूरा करने में मुआविन (सहयोगी) बनें। दूसरी जगह रिश्ता ना मुबारक होगा। मैं निहायत आजिजी और अदब से इल्तिमास करता हूं कि इस रिश्ते से मुंह न मोड़ें, इस से आप की लड़की को किस्म किस्म की बरकतें मिलेंगी।

शाह कादिरी सय्यिद मुस्तफा रिफाअी

इस तरह के खुतूत और भी हैं। सिर्फ इन दो खतों से जो नतीजे सामने आते हैं वह यहां पर पेश हैं :

१. तमाम इलहामात निकाह से मुतअल्लिक गलत और बनावटी थे। अगर इन पर मिर्जा का ईमान था जैसा कि खुदा की कसम खा कर कहते हैं तो फिर ऐसे खुतूत लिखकर इलहाम को पूरा कराने की कोशिश की क्या जरूरत थी। निकाह जो आसमान पर हुआ था जमीन पर भी जरूर हो जाता।

२. मिर्जा ने झूठी कस्में खाईं जो सिर्फ लड़की के वादिलैन और मुतअल्लिकीन को यकीन दिलाने के लिए थीं।

३. मिर्जा ने खुदाए तआला का भरोसा छोड़ कर आजिजी और चापलूसी इन्सानों की की और मिन्नतें समाजतें कीं, एक आम शरीफ आदमी भी ऐसी बेहयाई नहीं कर सकता।

४. मिर्जा जी ने खुदा पर बुहतान और मिथ्यारोप लगाया कि खुदा ने मेरा निकाह आसमान पर कर दिया।

५. मिर्जा जी ने अपनी सम्धन को भाई के साथ लड़ने की तरगीब दी जब कि अहमद बेग अपनी बेटी मुहम्मदी

(शेष पृष्ठ १६ पर)

क्या ईमान के साथ यह बात जमा हो सकती है?

मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी रह०

आज मुसलमानों का मसअला यह है कि वह खतरे को समझते हुए भी अपने फायदे के लिए और मसलहतों को और आराम व तन आसानी और थोड़ी सी आमदनी को और थोड़े से कैरियर और भविष्य को प्राथमिकता देते हैं। अर्थात मुसलमानों के ईमान की कमजोरी यहां तक पहुंच गई है कि यह खतरा नहीं बर्दाश्त कर सकते कि बाप जा कर के स्कूल में कहदे कि मेरा बच्चा उर्दू पढ़ना चाहता है, इसके उर्दू पढ़ाने का इन्तेजाम किया जाय। इस लिए कि वह खुद तैयार नहीं है, उसकी आत्मा तैयार नहीं है, वह कहता है कि मेरा बच्चा अगर हिन्दी को छोड़कर उर्दू पढ़ेगा तो उसका भविष्य रौशन नहीं है, और वह इस कैरियर को हासिल नहीं कर सकता, वह अपने साथियों से जो हिन्दी के जरियः तालीम हासिल कर रहे हैं या हिन्दी ही पढ़ रहे हैं उनके मुकाबले में पीछे रह जायेगा, और उसको बड़ी नौकरी नहीं मिलेगी। आप बताइये क्या ईमान के साथ यह बात जमा हो सकती है?

याद रखिये ! अगर आप ने अपने बच्चे की दुनिया को उसके दीन पर तर्जीह (प्राथमिकता) दी तो अल्लाह तआला आप को आप की जिन्दगी में दिखायेगा कि आप तरसेंगे, उस के एक एक पैसे को, आप तरसेंगे उसकी रोटी के टुकड़े को, आप तरसेंगे उसके एक सलाम को कि वह आप को सलाम करे। यह खुदा की तरफ से फौरी और पहली सजा है जो दुनिया में मिलती है और जो सजा वहां मिलेगी कुरआन ने उस को भी स्पष्ट कर दिया है कि वह औलाद यह कहेगी कि:–

तर्जमः "ऐ हमारे रब ! हम ने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना था। सो उन्हों ने हम को सीधे रास्ते से गुमराह किया था। ऐ हमारे रब! उन को दोहरी सजा दीजिए और उन पर बड़ी लअनत कीजिए।"(अहजाब : ६७, ६८)

ऐ ईमान वालो अपने को और अपने अहल (मुतअल्लिकीन) को (दोजख की) आग से बचाओ जिस का ईंधन आदमी और पत्थर है। जिस पर सख्त मिजाज मजबूत *फिरिश्ते* मुकर्रर हैं, जो खुदा की किसी बात में भी नाफरमानी नहीं करते जो उन को हुक्म मिलता है। बल्कि वह वही करते हैं जिस का उन को हुक्म मिलता है। (पवित्र कुर्आन ६६:६७,६८)

हे प्रभू आनन्द दाता ज्ञान हम को दीजिए। शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से कीजिए।।

आप का घर

डा० रैहान अन्सारी भीवन्डी

यह बात तो सभी जानते हैं कि बन्द कमरे में चाहे वह एयर कन्डीशन ही क्यों न हो, बराबर कई घन्टे तक बन्द रहना सिहत (स्वास्थ) को बहुत नुक्सान पहुंचाने वाला है। आज के आधुनिक आफिस तो बहुत सारे कीमियाई अज्ज़ा (रासायनिक तत्वों) और गैसों से भरे होते हैं, जैसे बिल्डिंग मैट्रीयल में प्रयोग होने वाले केमीकल की बू (गंध), सफाई के लिये विभिन्न रासायनिक घोल, फोटो कापी करने के सामान सिग्रेट के धुएं आदि।

मगर इस बात से हमारे समाज के कितने ही लोग बे खबर हैं कि उन के पास घर में ऐसी अनगिनत चीजें पाई जाती हैं जो उन्होंने जीवन में सुख तथा सन्तोष के लिये इकट्ठा कर रखी हैं। शहरों के घर एक लाइन में कई तल्ले वाले नपे तुले हुआ करते हैं। एक औसत दर्जे के मकान में कम से कम चालीस काम में आने वाली ऐसी चीजें पाई जाती हैं जिन से रासायनिक भापें निकलती रहती हैं, जैसे फर्श साफ करने वाले घोल, कीड़े मार दवाएं, विभिन्न स्पिरे, लोशन, क्रीम, साबुन, अगरबत्तियां, इत्र आदि। ऐसे लोग जिन का जियादातर वक्त घर की दीवारों के बीच गुजरता है खास तौर से छोटे बच्चे और बूढ़े लोग, उन में उक्त वस्तुएं विभिन्न बीमारियां बनने का सबब बन जाती है। दिल और फेफड़े की पहले से मौजूद बीमारियां में बढ़ोतरी हो जाती है। दमा की खांसी का रोग लग जाता है।

घरों में बअज चीजों के जलने से कारबन मोनो आक्साइड जैसी खतरनाक गैस पैदा होती है जो हवा का मुनासिब गुजर न होने के सबब घर की हवा में खास तौर से किचिन में फैल जाती है और सांस के रास्ते जिस्म में दाखिल होकर दिल और खून की नालियों के मुख्तलिफ (विभिन्न) मरजों का सबब बन जाती है। इस तरह नमी वाली दीवारों पर किस्म किस्म के जरासीम (कीटाणु) और फफून्द पलते बढ़ते हैं जो जियादा हस्सास वाले मिजाजों में बीमारियां पैदा करते हैं।

मेहमान खाना

मेहमान खाने के सजावट वाले सामान जैसे रंग, रौगन, कप, बोर्ड, प्लाइ वुड के सामान, कारपेट और परदों आदि की तैयारी में काम आने वाला कैमिकल फारमालडिहाइड भाप की शक्ल में हवा में शामिल होता रहता है जब यह सारा सामान बिल्कुल नया होता है तो इसका इखराज लगभग तीन गुना जियादा होता है। उस की बू कुछ नागवार होती है और हवा में उस की मौजूदगी से आंखों और गले की जलन, सिर का दर्द, चक्कर और बोझल पन, मत्ली और कस्ल मन्दी पैदा हो जाती है। अगर कमरे में हवा का गुजर मुनासिब अन्दाज में होता रहे तो रोगों से बचा जा सकता है।

एयर कन्डीशन कमरे

बहुत से घरों में सोने के कमरों को एयर कन्डीशन कर लिया जाता है। याद रखना चाहिए कि अगर एयर कन्डीशन की मुकर्ररा वक्त पर सरविसिंग न कराई जाए तो उन में बैक्टीरिया और फफून्द पलते बढ़ते हैं और कमरे की हवा में उनकी तादाद बराबर बढ़ती रहती है।

पालतू जानवर :

पालतू जानवरों को घर में बे तकल्लुफी से हर कमरे में आने जाने की इजाजत होती है इस तरह उन से बहुत सी बीमारियां फैलती है उन के बालों से झड़ने वाली भूसी या उनके किसी भी जगह पाखाना पेशब करने से कई बीमारियों के फैलने का खतरा रहता है। पिंजरों में कैद चिड़िया या फिश पांड में मर जाने वाली मछलियां भी रोग फैलाने का सबब बनती हैं।

बाथ रूम :

बाथ रूम की हवा अक्सर घिरी हुई होती है और वहां ताजा हवा का गुजर बहुत कम होता है, खिड़कियां भी बहुत छोटी होती हैं इस लिए उस की हवा में बराबर नमी पाई जाती है। बाथ रूम की दीवारों पर कीटाणुओं और फफून्द को पलने का अच्छा माहौल (वातावरण) मिल जाता है उनकी साफ सफाई के लिए काम आने वाले तरह तरह के घोल जो रासायनिक तत्वों वाले होते हैं जो हवा को प्रदूषित (कसीफ) बना देते हैं। इस तरह आंख या नाक और सांस के रास्ते की नाजुक साख्तों (कोमल बनावटों) के लिए बड़ी तकलीफ का सबब बनते हैं।

किचन रूम :

किचन रूम या बावर्ची खाना पूरे कुंबे की सिहत का जामिन (प्रतिभू) है। नये दौर का किचन रूम रिवायत तोड़ने वाला है। इस में चूल्हा फूंकने का कोई सामान नहीं होता बल्कि गैस का चूल्हा, माइकरावीवावोंन रेफ्रीजिरेटर, मिक्सर वगैरह उस के जरूरी सामान हैं। चूल्हे से कार्बन मोनोआक्साइड और नाइट्रोजन डाई आक्साइड नामी गैसें निकलती हैं और किचन की हवा को जहरीली बना देती हैं। बरतन, मान्डे किचन सिंक में धोने से हवा में नमी बढ़ती है और फफूंद और बैक्टीरिया की बहुत सी किस्मों को पलने बढ़ने का माहौल मिल जाता है। अच्छी शक्ल यह है कि किचन रूम में हवा के आने जाने का अच्छा इन्तिजाम हो।

सोने की जगह :

औस्तन एक तिहाई जिन्दगी आदमी अपने बेड रूम में बिताता है इस लिये बेड रूम की हवा और उस की चीजें उस की सिहत पर असर डालती हैं। बेडरूम में छोटे–छोटे कीड़े मकोड़े च्यूटिया आदि तो मौजूद ही रहती हैं। बिस्तर और गद्दों में धूल अन्दर तक पहुंच जाती है, कम बोर्ड, वार्ड रोब और दूसरे फरनीचर की ऊपरी सतह पर धूल की मूटी तह अक्सर बनती है चारपाई या सूफे के नीये की धूल भी आम तौर से जल्द हटाई नहीं जाती माहिरीन का कहना है कि बेड रूम को वैकूम क्लीनर से साफ करने से धूल से बड़ी हद तक नजात मिल सकती है।

सिग्रेट नोशी :

यह बात लग भग सभी जानते हैं कि सिग्रेट फेफड़े के सभी रोगों और कैन्सर के साथ दिल के रोगों का एक बड़ा सबब है लेकिन क्या सिर्फ सिग्रेट पीने वाले ही उस से मतअस्सिर (प्रभावित) होते हैं? जी नहीं, उन के साथ उनके घर के लोग भी खास तौर से बच्चे ऐसे रोगों का आसानी के साथ शिकार हो जाते हैं। इस की सब से बड़ी वजह यह है कि आप का घर के अन्दर सिग्रेट नोशी करना और उस का धुंवा बराबर घर की हवा में मिलाते रहना है। यह धुंवा सांस के रास्ते घर के दूसरे लोगों को मुतअस्सिर करता है, इसे पैसिव स्मोकिंग कहते हैं। सिग्रेट का धुंवा बड़ा खतरनाक होता है, तम्बाकू का जहर इस में बड़ी मिकदार (भारी मात्रा) में पाया जाता है। इस के अलावा सिग्रेट के जलने से कारबन मोनोआक्साइड गैस भी पैदा होती है।

(उर्दू माह नामा साइन्स के शुक्रिये के साथ)

मच्छर

जो जानदार इन्सान को तकलीफ पहुंचाते हैं और उस का खून चूसते हैं उन में से मच्छर भी हैं। यह रात को सोते हुए आदमियों को डंक मार कर उन का खून ही नहीं चूसता बल्कि उनके जिस्म में विभिन्न बीमारियों के कीटाणु (जरासीम) भी दाखिल करता है। कुछ मच्छरों के काटने से पीला बुखार आने लगता है, एक मच्छर के काटने से इन्सान को मलेरिया हो जाता है। मच्छर अण्डे देता है, अन्डों से पूरा मच्छर बनने में ४० दिन लगते हैं मादा मच्छर एक वक्त में लगभग १५० अण्डे देती है। मच्छर की पैदाइश जियादातर बरसात में होती है और इस की पसन्द की जगह झील तालाब नदी नाले हैं जिन के कनारे घास फूस उगी हो। अगर आबादी के पास गढ़ो में पानी भरा हुआ हो, घर गीला रहता हो, नालियों को साफ न किया जाता हो तो ऐसी जगहों पर भी मच्छर अण्डे देते और पलते बढ़ते हैं।

मच्छरों से बचने के तरीके

घरों को हमेशा ऊंची कुर्सी डालकर ढालदार जगह पर बनाना चाहिये ताकि घर में कहीं पानी न रूके। घर के आंगन को साफ सुथरा रखना चाहिए, आंगन में इधर उधर पानी न फेंका जाए न कूड़ा करकट और न किसी तरह की गन्दगी इकट्ठा होने दी जाय। पाखाना और नालियों को रोजाना साफ कर के उन में फिनाइल या डीडीटी छिड़की जाए। खिड़कियों में बारीक जाली लगवाई जाए। हो सके तो सोते वक्त मच्छर दानी का इस्तिअमाल किया जाए।

अगर शाम के वक्त नीम की पत्ती का धुंवा सुल्गा दिया जाए तो मच्छर भाग जाते हैं। कहते हैं तुलसी के दरख्त के पास मच्छर नहीं आते लिहाजा गमलों में तुलसी के पौदे लगा कर घरों में रख कर भी मच्छरों से बचा जा सकता है।

Mob. 9336230892
2462215

खालिद हुसैन चिश्ती

इंजीनियर्स मार्बल

डीलर
हर प्रकार के मार्बल
ग्रेनाइट एवं टाइल्स

जाजमऊ, लखनऊ कानपुर
रोड, केसा के सामने, कानपुर

एन्जाइना का दर्द

प्रो० डा० वी०के० बहल

हृदय एक पंप के समान काम करता है। एक मिनट में यह करीब ७० बार धड़कता है और दिन भर में यह लगभग २००० गैलन रक्त का संचार शरीर में करता है जिस से शरीर के विभिन्न अंगों को आक्सीजन मिलती है। यह आक्सीजन इसे कोरोनरी आरट्रीज नामक रक्त धमनियों से मिलती है। जब इन रक्त धमनियों में सिकुड़न या रूकावट आ जाती है तो हृदय को पूरी मात्रा में आक्सीजन नहीं मिल पाती और ऐसी स्थिति में व्यक्ति को एंजाइना का दर्द या हृदयशूल शुरू हो जाता है। ज्यादातर यह रूकावट इन धमनियों में कोलेस्ट्राल के जमां होने की वजह से होती है। जैसे जैसे यह सिकुड़न बढ़ती जाती है, कोरोनरी धमनी में रक्त प्रवाह कम होता जाता है तथा रोगी की स्थिति गंभीर होती जाती है।

लक्षण

इस के रोगी द्वारा बताए दर्द या पीड़ा का विवरण का यदि सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जाए तो दूसरी किसी भी पीड़ा से अलग इसे आसानी से पहचाना जा सकता है। सामान्यतः यह दर्द छाती के बीचोबीच होता है लेकिन कभी कभी यह पूरी छाती गरदन, निचले जबड़े य दोनों भुजाओं में भी फैल सकता है। अक्सर इस के मरीजों को लगता है कि उस की छाती में कोई भारी बोझ रख दिया गया है या पूरी छाती जकड़ रही है। इस के साथ–साथ उन्हें पसीना भी आ सकता है।

आमतौर पर एंजाइना का दर्द चलने या कोई भारी काम करने में होता है और आराम करने से ठीक हो जाता है। यह खाना खाने के तुरंत बाद भी हो सकता है। कभी कभी रोगी सांस फूलने या चक्कर आने जैसी शिकायतों सहित भी डाक्टर के पास पहुंचता है। अकसर बैठे–बैठे या आराम करते हुए भी छाती में लोगों को प्रायः बाईं ओर एक निश्चित बिन्दु या जगह पर कुछ सेकेण्ड के लिए होने वाली तेज चुभन एंजाइना लगती है। जबकि ऐसा नहीं होता। इसी तरह कई दिनों तक बना रहने वाला हलका–हलका छाती का दर्द भी आमतौर पर एंजाइना नहीं होता।

ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर छाती के दर्द के और क्या कारण हैं। जबकि लोगों में यह सोच घर कर गई है कि छाती में उठने वाला दर्द एंजाइना है। यह सोच गलत है। छाती में दर्द कई दूसरे कारणों से भी हो सकता है जैसे –

मांसपेशी का दर्द

गरदन में रीढ़ की हड्डी के बढ़ने से दबाव आता है। इस से भी छाती या भुजाओं में दर्द हो जाता है।

पेट की बीमारियां जैसे, पेपटिक अलसर या पित्त की पथरी का दर्द भी छाती में फैल सकता है।

मानसिक तनाव की वजह से भी ऐसा एहसास होता है।

पसलियों का दर्द

हृदय की झिल्ली की सूजन (पेरिकारडाइटिस)।

फेफड़ों के कुछ रोग।

चमड़ी की कई बीमारियां भी छाती में दर्द का कारण हो सकती है।

एंजाइना की पहचान व उपचार के लिए आवश्यक टेस्ट

खून की जांच जिस में शुगर, कोलेस्ट्राल, हीमोग्लोबिन आदि शामिल हैं। इससे रोगी में मधुमेह हाईकोलेस्ट्राल या एनीमिया की शिकायत का पता किया जाता है। एंजाइना के साथ–साथ इन का उपचार भी जरूरी है।

दर्द के दौरान यदि ईसीजी किया जाए तो परिणाम बेहतर होते हैं वरना केवल २०–२५ प्रतिशत रोगियों में ही सफलतापूर्वक इस की पहचान हो पाती है।

चूंकि एंजाइना का दर्द बहुत कम समय (२ से १५ मिनट) तक ही रहता है इसलिए आमतौर पर उस दौरान ईसीजी करवाना संभव नहीं हो पाता। होल्टर की जांच एक अच्छा विकल्प साबित हो सकता है।

स्ट्रेस टेस्ट में रोगी को ट्रेड मील नामक मशीन पर अथवा विशेष प्रकार की साइकिल पर चलवाया जाता है। इस नपीतुली कसरत के दौरान कंप्यूटर की सहायता से लगातार ईसीजी तथा रक्तचाप वगैरह रिकार्ड किए जाते हैं। ८० प्रतिशत रोगियों में इस टेस्ट से रोग की सही पहचान की जा सकती है।

रेडिया न्यूक्लाइड टेस्ट आणविक तकनीक पर आधारित है और स्ट्रेस टेस्ट से भी जियादा सफलतापूर्वक

हृदय रोग की स्थिति बताने में सक्षम है। आणविक टेस्ट का शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होता।

कोरोनरी एंजियोग्राफी से धमनियों की वास्तविक दशा दर्शाई जा सकती है। कोरोनरी धमनी में सिकुड़न व रूकावट कहां व कितनी है, इस का सही सही पता इस टेस्ट से चल जाता है।

रोगियों का भविष्य

आज के समय में एंजाइना के रोगी निराश न हों। उपयुक्त इलाज इस रोग का काबू पाने में पूरी तरह से कारगर है। इस के मरीजों के लिए लंबा व उपयोगी जीवन संभव है। कुछ बातों को ध्यान में रखा जाए तो एंजाइना के दर्द से बचा जा सकता है।

धूम्रपान छोड़ देने भर से काफी हद तक इस रोग को बढ़ने से रोका जा सकता है।

अधिक भागदौड़ भरे जीवन की लय बदल ली जाए व नपेतुले अंदाज में जीवनयापन करते हुए प्रतिदिन आधे घंटे की सैर करें तो काफी लाभ होगा।

मधुमेह व उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों को काबू में करना बहुत जरूरी है। भोजन में घी, मक्खन मलाई, तली हुई चीजें, अंडे का पीला भाग, आइसक्रीम, चाकलेट जैसे पदार्थ जिन में चर्बी या कोलेस्ट्राल अधिक होता है, बिलकुल ग्रहण न करें। भोजन सफोला, सूरजमुखी तेल वगैरह में ही बनाएं। मोटापा कम करना जरूरी है।

दवाएं काफी हद तक रोग को काबू में रखती हैं। लेकिन दवाएं बिना डाक्टर की सलाह के न लें और न ही बंद करें।

जिन रोगियों को दवाओं से लाभ नहीं हो पाता और उन की कोरोनरी धमनी में बहुत अधिक सिकुड़न होती है, उन्हें जांच के बाद बैलूनिंग या बाईपास ग्राफ्ट सर्जरी की सलाह दी जाती है।

बैलूनिंग या एंजीयोप्लास्टी तकनीक में एंजीयोग्राफी की तरह जांघ से एक महीन सूराख द्वारा सिंथेटिक तार जिस के ऊपर एक छोटा सा बैलून या गुब्बारा लगा होता है, को कोरोनरी धमनी में रूकावट की जगह पहुंचाया जाता है। फिर बैलून को कुछ देर के लिए फुला दिया जाता है जिससे सिकुड़न ठीक हो जाती है। इस तकनीक में मरीज को बेहोश नहीं करना पड़ता और न ही कोई चीरफाड़ा करनी पड़ती है। अतः रोगी एक दिन बाद काम पर वापस जा सकता है।

बाईपास सर्जरी या आपरेशन की मदद तब ली जाती है जब बैलूनिंग या एंजीयोप्लास्टी संभव नहीं होती। एंजाइना का रोग गंभीर जरूर है लेकिन चिकित्सा विज्ञान में हो रही प्रगति ने रोगियों के लिए अब इसे सहज बना दिया है। बस जरूरत है ऊंचे मनोबल व रोग पर विजय पाने के दृढ़ संकल्प की।

गाजर

गाजर को भूभुल में पकाएं, फिर फाकें काट कर रात को ओस में रख दें, सुब्ह को शकर या मिस्री के साथ खाएं दिल की कमजोरी में बहुत फाइदेमन्द है।

गाजर के फाइदे बहुत हैं जब तक मिले एक दो गाजर खूब चबा कर खाएं।

प्रोटीन

अजजाए लहमीया को प्रोटीन (Proteins) और नाइट्रोजीनस (NITROGENOUS) भी कहते हैं, गिजा में इन अज्जा का होना बहुत जरूरी है इस लिये कि यही अज्जा हमारे जिस्म की परवरिश करते और उस को बढ़ाते हैं। बचपन और शुरूअ जवानी में जो कि जिस्म की बढ़ोत्तरी का जमाना है इस किस्म के गिजाई अज्जा की जरूरत बहुत जियादा है। इस किस्म की गिजाओं को इतना इस्तिअमाल कि खून की जियादती से दूसरे रोग लग जाएं ठीक नहीं है। हम आप की आसानी के लिए बअज गिजाओं के प्रोटीन का फीसद लिख रहे हैं।

नाम गिजा	प्रोटीन
चना उबला हुआ	30 प्रतिशत
मूंगफली	28 प्रतिशत
चावल	3 प्रतिशत
गेहूं	18 प्रतिशत
अन्डा	13 प्रतिशत
दूध	4 प्रतिशत
हरी तरकारियां	2 प्रतिशत
बादाम	24 प्रतिशत
चिड़ियों का शोर्बा	22 प्रतिशत
यखनी, सिरी, पाये	30 प्रतिशत
दाल पकी हुई	8 प्रतिशत
गोश्त	28 प्रतिशत
मछली	20 प्रतिशत
कलेजी	20 प्रतिशत
सूखे मेवे	30 प्रतिशत
पनीर ताजा	28 प्रतिशत
चने की दाल	17 प्रतिशत
उरद	24 प्रतिशत
मूंग	25 प्रतिशत
लोबिया	23 प्रतिशत
मसूर	25 प्रतिशत

तअ़ज़ियादारी और मैं

अबू मर्ग़ूब

मैंने अपने वालिद साहि़ब से बात की उन्होंने भी इसी तरह़ का जवाब दिया। मुझ पर सख़्त रद्दे अ़मल हुआ। मैं तअ़ज़ियादारी और उससे मुतअ़ल्लिक़ तमाम कामों, बाजा, अ़लम, वग़ैरह से दूर रहने का इरादा कर लिया। उन्हीं दिनों मैं वालिद साहि़ब के बस्ते में ज़मीन्दारी के बैअ़नामे वग़ैरा के दस्तावीज़ात देख रहा था, उसी बस्ते में मुझे एक बोसीदा किताब मिली जो रंगून (बर्मा) की छपी हुई थी, उसमें तअ़ज़िया के मसले को बहुत अच्छे ढंग से समझाया गया था कि यह तअ़ज़ियादारी नाजाइज़ है। ह़राम है। किताब इतनी बोसीदा थी कि वरक़ पलटते ही वरक़ के दो टुकड़े हो जाते थे। किताब पढ़ कर मैं ने वालिद साहि़ब को उसे दिखाया वह तो उसे पढ़े हुए थे। देखते ही बोले : कि किताब में जो कुछ लिखा है सब सही़ह़ है। लेकिन मुआशरे से इख़्तिलाफ करना हमारे बस का नहीं। मैंने ज़रा जुरअत से काम लिया और अ़र्ज़ किया लेकिन आप की ज़मीन कोई ग़सब करना चाहे तो आप लाठी लड़ने को भी तैयार और मुक़द्दमा करने को भी। बोले : हां मगर तअ़ज़ियादारी छोड़ने पर गांव के लोग और क़ुर्ब व जवार के लोग मुझे कंजूस कहेंगे। मेरे वालिद साहि़ब इन तमाम मुआमलात के सरग़ना थे। खान्दान से चन्दा वग़ैरह इकट्ठा करने का काम उन ही का था। मुह़र्रम क़रीब आ गया था। तअ़ज़िया ख़रीदने और अ़लम वालों को शरबत पिलाने के मसारिफ़ के लिए

मेरी वालिदा ने बताया कि मेरे यहां एक लड़की तो थी मगर जो भी लड़का पैदा होता अन्दर साल वफ़ात पा जाता। उन्हों ने कहा इस पर मुझे बहुत ग़म रहता था। किसी ने उन से कहा कि तअ़ज़िया की मन्नत मानो, मैं अन पढ़, दीन की बातों से नावाक़िफ़ तअ़ज़िया मान दिया कि अगर लड़का पैदा हुआ और ज़िन्दा रहा तो तअ़ज़िया रखूंगी। ख़ुदा की करनी तुम पैदा हुए और ज़िन्दा रह गये तब से मैं तुम्हारे नाम का तअ़ज़िया रखती हूं। तुम्हारे नाम से दो अ़लम भी चढ़ाए। तुम्हारे कान छेदे और ह़ज़रत ह़ुसैन का दुर (सोने का ह़ल्क़ा) भी पहनाया और तुम से ह़ज़रत इमाम ह़ुसैन की भीख भी मंगवाई।

जब मैं पांचवे किलास में पढ़ता था तो तअ़जिया व अ़लम के कामों में खूब हि़स्सा लेता, अ़लम मिलाने जाता, मुह़र्रमी बाजे बजाता, कभी ढोल बजाता, कभी ताशा कभी झांझ बजाता तो कभी लेजिम लेकर पैंतरे चलता, तअ़ज़ियों के जुलूस में मरसिये पढ़ता, आहिस्ता आहिस्ता सीना भी पीटता। मजलिस में शहादत नामा पढ़ता ग़रज़ कि तअ़ज़िया के हर काम में बढ़ चढ़ कर हि़स्सा लेता अ़लम वालों को शरबत पिलाने में बढ़चढ़ कर हि़स्सा लेता। यह सिलसिला कई साल तक चला। मेरे गांव में एक ढोल थी जब वह कभी फूट जाती तो उस के बनवाने की जानिब किसी को तवज्जुह न होती। मैं ही एक साहि़ब की मदद से क़ुर्बानी की खाल से उस को मंढ़वाता, ताशा मेरा अपना था। झांझ की एक जोड़ी थी उसकी एक झांझ टूट कर आधी ही रह गई थी। नौ उम्री का ज़माना अपने साथियों में मेरे मुंह से निकल गया कि हमारे गांव के मुसलमान तो काफ़िर हैं मुह़र्रमी बाजा भी ठीक से नहीं रख्ते ख़ान्दान के बड़े बाबा को मेरी बात पहुंचाई गई वह बहुत ग़ुस्सा हुए। मुझे मस्जिद का इमाम बना दिया गया था अगर्चि मैं नाबालिग़ था लेकिन गांव के लोगों को मअ़लूम न था कि नाबालिग़ को इमाम नहीं बनाया जाता। हमारी इस बात पर हमारे बड़े बाबा ने एअ़लान कर दिया कि इस के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ूंगा इस ने तो हम लोगों को काफ़िर कह दिया, घर में भी डांट पड़ी मगर मेरी समझ में यह न आया कि मुआफ़ी मांग लूं। मुझे तो अब तअ़ज़िया के बारे में खोज की सूझी।

बड़े बाबा के अक्लौते बेटे मेरे वालिद के चचा ज़ाद भाई थे, कुछ पढ़े लिखे थे मैंने उन से पूछा कि चचा तअ़ज़िया व अ़लम का क्या ह़ुक्म है? फ़रमाया बेटे अ़लम पर तो देख़ो किसी पर हाथ का पंजा है। किसी पर सर मअ़े ताज है यह सब तो यज़ीदियों ने किया था। रहा तअ़ज़िया तो इस में इमाम ह़ुसैन की झूठी क़ब्र बनाते हैं, उस पर चढ़ावा चढ़ाते हैं। यह सब नाजाइज़ है। मैंने कहा फिर आप इस से अलग क्यों नहीं हो जाते? बोले बाप दादा करते आए हैं इस लिए छोड़ नहीं सकते।

चन्दा करने का वक़्त आ गया, ७, ८, ६ मुहर्रम, तीन दिन तक रोज़ाना हज़ार के क़रीब शरबत पीते थे वालिद साहिब पर मेरी गुफ़तुगू का कुछ असर पड़ा था वालिद साहिब अब तक ख़ामोश थे। बड़े बाबा ने टोका : इस साल मुहर्रम नहीं होगा क्या ? मैं मौजूद था– बोल पड़ा : बाबा तअ़्ज़िया दारी नाजाइज़ है। हम न तअ़्ज़िया रखेंगे न उस में चन्दा देंगे। बाबा बोले : अच्छा अभी तक तो बाजा न होने पर काफ़िर बना रहे थे अब तअ़्जिया ही को छोड़े दे रहे हो। मैं बोला : बाबा मुआफ़ कर दीजिए वह बात मेरी ना समझी की थी और अब जो कुछ कह रहा हूं वह आ़लिमों की लिखी हुई बात है। वह बोले मैं तो बाप दादा की रस्म छोड़ने से क़ासिर हूं और तुम को भी ह़स्ब मअ़मूल चन्दा देना है। वरना तुम अ़लम वालों की लअ़नत मलामत से बच न सकोगे। वालिद साहिब बोले : अच्छा शरबत पिलाना तो सवाब का काम है? लिहाज़ा मैं शरबत पिलाने में शिरकत करूंगा। इस तरह वालिद साहिब ने चन्दा दे दिया। अगले मुह़र्रम से पहले वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया। मुह़र्रम आया तो गांव वाले ख़ामोश थे। मैंने एअ़लान कर दिया कि न चन्दा दूंगा न लूंगा न तअ़्ज़िया रखूंगा अल्बत्ता अ़लम वालों को मैं अकेले शरबत पिलाऊंगा, मैंने वैसा ही किया लेकिन तमाम अ़लम वालों को बाख़बर कर दिया कि बेशक प्यासों को शरबत क्या पानी पिलाना भी सवाब है लेकिन अज़ादारी के अ़लम वालों को शरबत पिलाना उन के गुनाह में मदद करना है। इस लिए आइन्दा मैं इस से भी अलग होता हूं। मैंने ख़ुदा का शुक्र अदा किया कि मेरा मुआ़मला तो लाऩत मलामत ही तक रहा लेकिन बअ़ुज़ ह़क़ परस्तों ने जब तअ़्ज़ियादारी का इन्कार किया तो ज़बरदस्ती उन के गले में ढोल लटका कर ढोल बजवाई गई और तअ़्ज़िया उठाने में उनको जबरन लगाया गया।

मेरा पूरा ख़ान्दान उलमाए बरेली से अक़ीदत रखता था मैंने खोज किया तो उनकी किताबों में भी तअ़्ज़ियादारी को नाजाइज़ लिखा पाया लेकिन जब मुआ़शरे ने मुझे और मुझ जैसों को लाऩत मलामत की तो किसी बरेलवी आ़लिम ने अपनी तक़रीरों में उनके ख़िलाफ़ एक जुम्ला न कहा मजबूर होकर मैंने ऐसे उ़लमा से राबिता किया जो अपनी तक़रीरों में साफ़–साफ़ तअ़्ज़ियादारी और शादी ब्याह की ग़लत रस्मों, नाच, गाना, बाजा आदि की मुख़ालिफ़त करते थे। उन उ़लमा से जो दीनी मअ़्लूमात मुझे मिलीं मुझे उन से इत्मीनान हुआ, इस तरह अल्लाह तआ़ला ने मुझे तअ़्जियादारी के गुनाह से बचा लिय।

जब मैं तअ़्ज़ियादारी से अलग हुआ जाहिल अ़वाम मुझे डराने लगे कि बस अब तुम्हारी बर्बादी धरी है, देख लेना इमाम साहिब तुम्हारा नास करके छोड़ेंगे। मैंने उन कोसमझाने की कोशिश की कि तुम जो कुछ बक रहे हो इस का दीन से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। मैं तअ़्ज़िया उस शरीअ़त के ह़ुक्म से छोड़ रहा हूं जिस शरीअ़त के लिये ह़ज़रत ह़ुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने शहादत का जाम पिया। आप बताएं कि ह़ज़रत ह़ुसैन (रज़ि०) ने यज़ीद के हाथ पर बैअ़त क्यों न की? इसीलिये तो कि वह उनके नज़दीक शरीअ़त की कसौटी पर खरा न उतरता था। बस मुझे ह़ज़रत ह़ुसैन की पैरवी में शरीअ़त को मज़बूत पकड़ना है।

अल्लाहु अकबर

मौ० मु०सानी हसनी

है ज़िक्रे बेहतर अल्लाहु अकबर
है ज़िक्रे अनवर अल्लाहु अकबर
है ज़िक्रे बरतर अल्लाहु अकबर
है ज़िक्रे अतहर अल्लाहु अकबर
ज़िक्रे मुअंबर अल्लाहु अकब्र
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
अ़ल्ला तआ़ला है पाक व बरतर
है सब का ख़ालिक़ है बन्दा परवर
ह़ज़रत मुह़म्मद उसके पयम्बर
जिस्मे मुनव्वर रूह़े मुतह्हर
इ़ज़्ज़त तसद्दुक़ दौलत निछावर
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
हम अहले ईमां हम हैं मुसलमां
ह़क़ के पयामी ह़क़ के हुदीख्वां
थामे हुए हैं हम शमअ़े ईमां
रखेंगे उस को हर दम फ़रोज़ां
यह ज़िक्र कितना है रूह़ परवर
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
इस्लाम हम को है दिल से प्यारा
राहत है दिल की आंखों का तारा
उस के हैं हम सब, वह है हमारा
चमके गा हर सू उस का सितारा
फैलेगा इन्शा अल्लाह घर घर
अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर
मरदाने ह़क़ हम और ख़ैरे उम्मत
दस्तूर अपना क़ुर्आन व सुन्नत
हम को ख़ुदा ने बख़्शी है इ़ज़्ज़त
क्या ख़ूब दौलत क्या ख़ूब निअ़्मत
कितना है रब का इह़सान हम पर
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
बुस्ताने दीं के गुल्हाए तर हम
अब्रे बहारी बादे सह़र हम
ह़क़ के लिए हैं, गर्मे सफ़र हम
मंज़िल ब मंज़िल हैं तेज़ तर हम
हम को मिली है, परवाज़े शह पर
अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर

ह़ज़रत सुमैया बिन्त खबात (रजि०)

तालिब हाशमी

अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद सल्ल० ने नुबूवत मिलने के बाद जब हक की दावत का काम शुरू किया तो वही कुरैश जो आप सल्ल० को 'अमीन–अमीन' कहते नहीं थकते थे, वे न केवल आप (सल्ल०) के खून के प्यासे हो गये बल्कि जो व्यक्ति भी हक की दावत को स्वीकार करता उस पर बेतहाशा जुल्मो सितम ढ़ाना शुरू कर देते थे। इस मामले में पुरूषों एवं महिलाओं में कोई भेद न था।

उसी जमाने में आप (सल्ल०) बनू मखजूम के मुहल्ले से गुजरे तो आपने देखा कि कुफ्फारे कुरैश ने एक बूढ़ी महिला को जंजीरों में जकड़कर धूप में जमीन पर लिटा रखा है और उस महिला को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं :

"मुहम्मद (सल्ल०) का दीन (धर्म) स्वीकार करने का मजा चख।"

उस महिला की बेबसी देखकर आप (सल्ल०) की आंखों से आंसू छलक पड़े और आप (सल्ल०) ने उस महिला को संबोधित करते हुए कहा कि :

"सब्र करो, तुम्हारा ठिकाना जन्नत में है। "

हक के रास्ते में जुल्म सहने वाली वह महिला जिसे आप (सल्ल०) सब्र करने की ताकीद की और स्वर्ग में जाने की शुभ सूचना सुनायी, यह हजरत सुमैया बिन्ते खबात थीं।

हजरत सुमैया बिन्त खबात (रजि०) की गिनती बहुत ही ऊंचे पाये के सहाबियों में होती है। उन्होंने अपनी कमजोरी और बुढ़ापे के बावजूद दिल दहला देने वाले मजालिम झेले। यहां तक कि इसी राह में शहीद हो गयीं। और इस्लाम की सबसे पहली शहीद होने का गौरव हासिल किया।

हजरत सुमैया (रजि०) के पिता का नाम खबात था। जिहालत के दिनों में वे मक्का के अबू हुजैफा बिन अल–मुगीरा मखजूमी की दासी थीं।

नुबूवत से लगभग ४५ वर्ष पहले कहतानी नस्ल का एक व्यक्ति यासिर बिन आमिर अपने खोये हुए भाई को खोजता हुआ मक्का में आया और फिर यहीं बस गया। मक्का में रहते–रहते उसकी दोस्ती अबू हुजैफा बिन अल मुगीरा से हो गयी। अबू हुजैफा ने हजरत सुमैया (रजि०) की शादी यासिर बिन आमिर से कर दी जिनसे उनके बेटे अब्दुल्लाह (रजि०) और अम्मार (रजि०) पैदा हुए।

यह वही जमाना था जब आप (सल्ल०) बचपन और जवानी की मंजिलें तय कर रहे थे। कहा जाता है कि आप सल्ल० के जीवन का हर दौर हजरत यासिर (रजि०) हजरत सुमैया रजि०, हजरत अब्दुल्लाह (रजि०) और हजरत अम्मार (रजि०) के सामने गुजरा और उन्होंने आप (सल्ल०) के महान व्यक्तित्व और श्रेष्ठ आचरण का बहुत गहरा असर कुबूल किया। क्योंकि नुबूवत के बाद आप (सल्ल०) ने हक की दावत देनी शुरू की तो इस पूरे परिवार ने बिना किसी प्रकार की झिझक का प्रदर्शन किये इस्लाम की दावत को स्वीकार कर लिया।

उस समय तक अबू हुजैफा की मृत्यु हो चुकी थी और हजरत सुमैया (रजि०) उनके वारिसों की दासी थीं। यह मुसलमानों के लिए बड़ा ही कठिन दौर था। मक्का का जो व्यक्ति इस्लाम कुबूल करता वह कुरैश के जुल्मों अत्याचार का शिकार हो जाता। कुरैश इस मामले में अपने निकट संबंधियों का भी लिहाज नहीं करते थे। हजरत यासिर (रजि०) और उनके दोनों बच्चों का मक्का आबाई वतन नहीं था और हजरत सुमैया (रजि०) भी बनू मखजूम पर अत्याचार ढाने में किसी प्रकार की रूकावट नहीं थी। उन लोगों ने इस बेकस परिवार पर ऐसे–ऐसे जुल्म के पहाड़ तोड़े कि मानवता सिर पीट कर रह गयी।

हजरत सुमैया (रजि०) और उनके पति हजरत यासिर (रजि०) दोनों बहुत ही कमजोर और बूढे थे। लेकिन उनकी ईमानी कुवत का हाल यह था कि मुशरिकीन मक्का उन्हें तरह तरह की दर्दनाक तकलीफें देते थे और शिर्क पर मजबूर करते थे लेकिन उनके कदम एक क्षण के लिए भी नहीं डगमगाये। यही हाल उनके बेटों का था।

इन चारों लोगों को लोहे की जंजीरें पहनाकर मक्के की तपती रेत पर लिटा दिया जाता। उनकी पीठ पर आग के अंगारे डाल दिये जाते और पानी में डुबकियां लगवायी जातीं और ऐसा लगभग रोज ही हुआ करता था।

एक बार आप (सल्ल०) उनके पास से गुजरे। उस समय उन लोगों पर जुल्म के पहाड़ तोड़े जा रहे थे। आप (सल्ल०) को यह देखकर बहुत दुख हुआ और आप (सल्ल०) ने फरमाया, : "सब्र करो ऐ यासिर के परिवार वालो। तुम्हारे लिए जन्नत का वादा है।"

एक और रिवायत में है कि आप (सल्ल०) हजरत यासिर (रजि०) हजरत सुमैया (रजि०) और उनके बच्चो को मुसीबत में देखा तो कहा : "सब्र करो। या अल्लाह, यासिर और उनके परिजनों की मगफिरत फरमा दे और तूने उनकी मगफिरत फरमा दी।

बूढ़े यासिर (रजि०) एक दिन जुल्म सहते—सहते चल बसे। लेकिन मुशरिकीन कुरैश को फिर भी उस परिवार पर रहम नहीं आया। और उन्होंने हजरत सुमैया (रजि०) और उनके दोनों बेटों पर जुल्म का सिलसिला बराबर जारी रखा।

एक दिन हजरत सुमैया (रजि०) दिन भर की कठोर यातनाएं सहने के बाद जब शाम को घर पहुंची तो अबू जेहल ने उनको गालियां देना शुरू कर दिया। और फिर उसका गुस्सा इतना बढ़ा कि उसने अपना बरछा हजरत सुमैया(रजि०) पर खींच मारा। वह उसी समय ज़मीन पर गिर पड़ीं और उनकी जान निकल गयी। एक रिवायत में यह भी आता है कि अबू जहल ने तीर मार कर हज़रत सुमैया (रजि०) के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह को शहीद कर दिया था। अब केवल हजरत अम्मार (रजि०) शेष रह गये थे। उनको अपनी मां की इस बेकसी की मौत पर बहुत दुख पहुंचा। वे आप (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुए और पूरी बात बताने के बाद कहा : "या अल्लाह के रसूल! अब तो जुल्म की इन्तिहा हो गयी।"

आप (सल्ल०) ने उन्हें सब्र करने को कहा और फरमाया :

"ऐ अल्लाह! यासिर के परिजनों को नर्क से बचा ले।"

हजरत अम्मार रजि० तो बेटे थे इस लिए वे मां की शहादत को कभी नहीं भुला पाये। लेकिन हजरत मुहम्मद (सल्ल०) को भी अबू जहल की यह क्रूरता और हजरत सुमैया (रजि०) की शहादत याद रही। अतएव बद्र की लड़ाई (रमजानुल मुबारक, सन् २ हिजरी) में जब अबू जहल जहन्नम रसीद हुआ तो आप सल्ल० ने हजरत अम्मार बिन यासर (रजि०) को बुलाकर कहा : "अल्लाह ने तुम्हारी मां के कातिल से बदला ले लिया।" हजरत सुमैया (रजि०) की शहादत हिजरते नबवी से कई साल पहले हुई थी इसलिए उन्हें इस्लाम के लिए शहीद होने वाली पहली शख्सियत करार दिया गया है।

हजरत उमर (रजि०) दुआ करते थे : ऐ अल्लाह मैं आप से आप की राह में शहादत का सुवाल करता हूं। और मेरी वफ़ात (शहादत) तेरे रसूल (सल्ल०) के शहर में हो। (मुवत्ता)

अल्लाह तआला ने आप की दुआ कुबूल फ़रमाई, एक बदबख़्त अबू लूलू ने ऐन नमाज़ की हालत में आप के पेट पर ख़ंजर मारा, फ़ज्र की नमाज़ थी वह मेहराब में छुपा हुआ था, ज़ख़्म सख़्त था, आप बच न सके पहली मुहर्रम को शहादत पाई

अक़ाइद मंजूम

मौ० फ़तेह मु० ताइब

ख़ुदा एक है दिल से जानो यक़ीं
सिवा उसके मअ्बूद कोई नहीं
हर इक शै पे हाकिम है क़ादिर है वह
हर इक जा पे हाज़िर है नाज़िर है वह
उसी ने किया ख़ल्क़ हर ख़ैर व शर
नहीं फ़अ्ले बद से वो राज़ी मगर
फ़िरिश्ते हैं नूरानी वो बे गुनाह
वो जिब्रील लाते थे, हुक्मे इलाह
किताबें हैं जितनी ख़ुदा की तमाम
वो सब हक़ हैं उन में नहीं कुछ कलाम
बुज़ुर्ग और हक़ गर्चि हैं अंबिया
मगर सब के सरदार हैं मुस्तफ़ा
मुहम्मद नबी साहिबे मुअ्जिज़ात
अलैहिस्सलाम व अलैहिस्सलात
दिया हक़ ने उन को वो क़ुर्आने पाक
कि लारैब फ़ी जिसकी है शाने पाक
ख़लीफा भी तर्तीब से चार हैं
वो हैं पेशवा और सरदार हैं
अबू बक्र फ़ारूक़ उस्मां अली
कि थे हम दमो जानशीने नबी
जो अस्हाब व औलाद व अज़्वाज हैं
वो हैं पेशवा और सरताज हैं
सुवाले नकीरैन है गोर में
जियेगा हर इक हश्र के शोर में
लिया जाएगा फिर हिसाबो किताब
बक़द्रे अमल है अज़ाबो सवाब
बजा औलिया की करामात है
नुजूमी की झूठी हर इक बात है

क्या मदरसे आतंकवाद के अड्डे हैं?

हबीबुल्लाह आज़मी

मुस्लिम उलमा के एक प्रतिमण्डल के समारोह में गृह मंत्री (वजीरे दाखिला) शिवराज पाटिल ने कहा कि मदरसे आतंकवाद के अड्डे नहीं हैं। उन्होंने कहा कि यह समाज सुधार के संस्थान हैं, जहां इंसानियत का पाठ पढ़ाया जाता है। श्री पाटिल का यह बयान उन उलमा के लिए संतोष का विषय है जिन के मदरसों पर मुम्बई बम ब्लास्ट के बाद जिहादी पैदा करने का आरोप लगाया गया था।

मदरसों को आतंकवाद से जोड़ना गलत और एक बेजा आरोप है। यह ऐसा इलजाम है जिसे साबित नहीं किया जा सकता है। यह बात अब साफ हो चुकी है कि मुम्बई बम ब्लास्ट को अंजाम देने वाले वह लोग हैं जो स्कूल व कालेजों के पढ़े हुए हैं न कि मदरसों के तमाम आतंकवादी गतिविधियों में वही लोग पकड़े गए जो आधुनिक संस्थाओं के पढ़े हुए थे। अमेरिका के स्कालर्स पीटर बरगेन और स्वतीपाण्डे ने ७५ आतंकवादियों के एक अध्ययन में यह पाया कि ५३ आतंकवादी कालेज के डिग्री होलडर्स थे। इन ७५ आतंकवादियों में केवल ६ मदरसों के पढ़े हुए थे और वह सभी केवल एक हमले में लिप्त थे जो बाली में हुआ था। और इस केस में भी इस की योजना बनाने वाले कालेज के पढ़े हुए थे जिन में दो यूनीवर्सिटी प्रोफेसर्स थे।

गत भारतीय जनता पार्टी की सरकार का यह एक प्रिय नारा था कि मदरसे आतंकवाद के अड्डे हैं परन्तु वह सरकार कोई सुबूत नहीं पेश कर सकी कि मदरसों का कोई सम्पर्क आतंकवाद से है। इस लिए गृहमंत्री मदरसों को क्लीनचिट देने में सही हैं।

हालांकि इन मदरसों को इस्लामी शिक्षा का केन्द्र कहा जाता है, यह हकीकत है कि आमतौर पर इन मदरसों में मुसलमानों का बहुत ही गरीब तबका पढ़ता है। इस का एक कारण उनकी गरीबी है तथा दूसरा कारण देश में प्राइमरी शिक्षा की बदहाली है। यह वर्ग मदरसों में अपने बच्चों को भेजने के लिए इसलिए मजबूर हैं कि वहां उन्हें फ्री शिक्षा ही नहीं मिलती बल्कि फ्री खाना और रहने की व्यवस्था भी है।

मदरसों में अधिकतर वही पुराना पाठ्यक्रम (निसाब) पढ़ाया जाता है जिस की वजह से मदरसों के पढ़े हुए नवजवान आधुनिक और साइंस व तकनीकी शिक्षा से दूर होते हैं। जिस का नतीजा यह होता है कि वह अपनी शिक्षा पूरी होने के बाद या तो किसी मस्जिद के इमाम हो जाते हैं या अपना मकतब या मदरसा खोलकर अपनी जीविका चलाते हैं और आधुनिक ज्ञान न होने के कारण अधिकांश मदरसे के फारिगीन इस्लाम के प्रचार व प्रसार में दक्ष नहीं होते। दुख की बात यह है कि मदरसा चलाने वाले अपने बच्चों को अक्सर अपने मदरसों में नहीं पढ़ाते हैं। खाते पीते मुसलमान जो मदरसों को कायम करते हैं या उनकी माली मदद करते हैं वह अपने बच्चों को अंग्रेजी मीडियम स्कूलों में भेजना पसन्द करते हैं यह बड़े अफसोस की बात है कि इस्लाम का झण्डा बुलन्द करने वाले मदरसों का बोझ गरीब मुसलमानों के कन्धों पर निर्भर है जिस में अधिक संख्या में निर्धन मुसलमान परिवार के बच्चे पढ़ते हैं।

एक अहम सवाल यह भी है विभिन्न मदरसे अपने विभिन्न मसलकों की रोशनी में इस्लाम की व्याख्या करते हैं। देवबन्दी बरेलवी और अहले हदीस के मदरसे अपने अपने मसलक के अनुसार इस्लाम की ऐसी व्याख्या करते हैं कि गैर मुस्लिमों पर इस का दुष्प्रभाव पड़ता है। यह मदरसे इस्लाम की असली पहचान के बजाए एक दूसरे की आलोचना में लगे रहते हैं और इस्लाम को अपने अपने ढंग से पेश करते हैं। एक देवबन्दी मदरसे के विद्यार्थी को बताया जाता है कि बरेलवी या दूसरे मसलक के लोग मुसलमानों को गुमराह कर रहे हैं और दूसरे इस के विपरीत प्रतिक्रिया (इस के बरअक्स रद्दे अमल) व्यक्त करते हैं। गृहमंत्री ने मुसलमानों के पिछड़ेपन के इन कारणों का उल्लेख करते हुए इस बात पर बल देते हुए कहा कि मदरसों का आतंकवाद से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है। जरूरत इस बात की है कि इस को आधुनिक शिक्षा (असरी तालीम) से जोड़ा जाए।

पाटिल की आलोचनात्मक टिप्पणियां

श्री पाटिल ने अपना यह भी विचार प्रकट किया कि इन मदरसों में विद्यार्थियों को यह भी पढ़ाया जाता है कि औरतों का स्थान मर्दों से कमतर है। यह कौन सी मानवता है जो मुसलमानों को यह शिक्षा देती है कि औरतों को घरों में रहना चाहिए, पर्दा करना चाहिए और अपने पतियों की सेवा करनी चाहिए।

इस समारोह में अवसर का फायदा उठाते हुए उन्हों ने उलमा और मदरसों को सुधार का भी उपदेश दिया और उलमा और मदरसों को मुसलमानों के पिछड़ेपन का जिम्मेदार ठहराया। इस टिप्पणी के साथ उन्होंने फिर स्वीकार किया कि हिन्दुस्तानी मदरसों का आतंकवाद से कोई लेना देना नहीं है और न ही उनका सम्बन्ध आतंकवाद की गतिविधियों से है। इन मदरसों की मुख्य समस्या सामाजिक रूढ़वाद की है जिस को राज्य और लोगों को हल करना चाहिए।

जहां तक गृहमंत्री श्री पाटिल की इन आलोचनाओं का सम्बन्ध है उस का जवाब इस से पहले भी कई बार दिया जा चुका है। मर्दों और औरतों के अधिकार और पर्दा करने और घरों में रह कर अपने शौहरों की सेवा करना तथा बच्चों की बेहतर परवरिश और घरदारी का सम्बन्ध है उस का उत्तर सच्चाराही के दिसम्बर २००६ के अंक में ''इस्लाम मर्दों और औरतों को बराबर के अधिकार प्रदान करता है'' के शीर्षक के लेख में पढ़ा जा सकता है जिस में पूरे तर्क के साथ इसका उत्तर मिल जाएगा।

मुसलमानों के पिछड़ेपन का मुख्य कारण उलमा और मदरसों पर डाला गया है। इस सम्बन्ध में यह पूछना चाहता हूं कि भारत में मदरसों में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या स्कूल और कालेज में मुस्लिम छात्रों की संख्या की अगर तुलना की जाए तो वह इतनी कम होगी कि मुसलमानों के पिछड़ेपन की जिम्मेदारी उलमा या मदरसों पर डालना तर्कसंगत हरगिज नहीं साबित होगी। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट के आंकड़ों को देखा जाय तो यही साबित होगा कि स्कूल कालेजों से पढ़े हुए छात्रों को सरकारी और निजी क्षेत्रों की नौकरियों में उनके साथ भेदभाव के कारण उन की संख्या बहुत ही कम है यहां तक कि मुसलमानों की दशा दलितों से भी नीचे चली गई है।

दूसरा मुख्य कारण यह है कि प्राइमरी और हायर सेकेन्ड्री स्टेज पर मुसलमान छात्रों के ड्रापआउट (स्कूल छोड़ने वालों) का प्रतिशत बहुत अधिक है। इसका मुख्य कारण उन की गरीबी तथा मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में अच्छे स्कूलों की कमी के कारण तथा उच्चशिक्षा मुख्य कर तकनीकी कालेजों में धन के अभाव के कारण है। इस प्रकार अगर देखा जाये तो मुसलमानों के पिछड़ेपन की पूरी ज़िम्मेदारी सरकार की है। १९४७ से लेकर आज तक सभी सरकारों का रवैया मुस्लिम समुदाय के साथ इसी तरह का रहा है। उद्योगों और व्यापार में जहां भी मुसलमानों की आर्थिक दशा कुछ सुधरती है वहां साम्प्रदायिक दंगे भड़का कर उनके कारोबार को तहस नहस कर दिया जाता है और उन की आर्थिक दशा को उस स्थान पर पहुंचा दिया जाता है जहां वह अपने बच्चों को पढ़ाने के बारे में सोच ही नहीं सकते। आखिर में मैं यह भी कहना चाहूंगा कि इन मदरसों ने उन निर्धन छात्रों को पढ़ाने की जिम्मेदारी उठा रखी है जो अगर इन मदरसों में न पढ़ते तो अनपढ़ रह जाते और भारत की अशिक्षित लोगों का प्रतिशत कहीं अधिक होता और देश की प्रगति में कहीं अधिक बाधक होता।

मदरसों के पाठ्यक्रम (निसाब) के बारे में यह भ्रम भी है कि यह केवल अरबी, कुर्आन व हदीस की तालीम देते हैं। दीनी मदरसों में, प्रारम्भिक कक्षाओं (इब्तिदाई दर्जों) में जनरल विषयों की भी शिक्षा दी जाती है। मकतबों में दीनियात के साथ उर्दू, हिन्दी, हिसाब, विज्ञान, समाज शास्त्र आदि की भी शिक्षा दी जाती है।

मकतब की पढ़ाई के बाद जो बच्चे स्कूलों में पढ़ना चाहते हैं वह स्कूलों में दाखला लेते हैं लेकिन जो दीनी तालीम में विशेष योग्यता हासिल करना चाहते हैं वह बड़े मदरसों या दारूल उलूम में अपनी उच्च शिक्षा की तालीम जारी रखते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जाए कि इन कक्षाओं में इस्लाम धर्म शास्त्र का स्पेशियलाइजेशन होता है। इन बड़े मदरसों या दारूल उलूम का मुख्य उद्देश्य इस्लाम धर्म शास्त्रों का विशेषज्ञ पैदा करना है जैसा कि जनरल शिक्षा में भी उच्च कक्षाओं में विषयों का वर्गीकरण होता है कोई आर्ट्स के विषय लेता है, कोई विज्ञान, कोई मेडिकल तो कोई इंजीनियरिंग पढ़ता है। नदवतुल उलमा लखनऊ के रेक्टर मौलाना सय्यिद राबे हसनी नदवी साहब ने अपने एक लेख में स्पष्ट किया है कि मेडिकल के छात्र से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह इंजीनियरिंग

का भी अध्ययन करे उसी प्रकार धर्म शास्त्रा के छात्रों से यह आशा नहीं रखनी चाहिए कि वह आधुनिक विषयों जैसे भौतिक विज्ञान, गणित, तकनीकि विषयों को भी उसी प्रकार पढ़ें जैसे स्कूल और कालेजों में पढ़ाया जाता है। मदरसों की प्रारम्भिक कक्षाओं में जनरल विषयों को आवश्यकतानुसार पढ़ा दिया जाता है और नदवा जैसे दारूल उलूम की उच्च कक्षाओं में जरूरत के मुताबिक हिन्दी, अंग्रेजी, समाज शास्त्र, कम्प्यूटर पत्रकारिता, आदि की शिक्षी भी दी जाती है लेकिन इस्लामी धर्म शास्त्रों में विशेष योग्यता का उद्‌देश्य सर्वोच्च रहता है। अतः यह कहना कि मुस्लिम समाज के पिछड़ेपन की जिम्मेदारी मदरसों और उलमा पर है सरासर निराधार है। ऐसा आरोप लगाकर श्री पाटिल अपनी और अपनी सरकार की जिम्मेदारियों से बचना चाहते हैं। अगर कोई समीक्षा कमेटी अध्ययन करे तो मालूम होगा कालेज व यूनिवर्सिटी से निकले हुए मुसलमान तालीमयाफता बेरोजगारों की संख्या मदरसों से तालीमयाफता से कहीं अधिक होगी। सरकारों को उन की रोजी रोटी की फिक्र करनी चाहिए।

(पृष्ठ ३४ का शेष)

वाले पुरूष को यह अनुमति दी है कि यदि वह इन्साफ कायम रख सके तो अधिक से अधिक चार औरतों से शादी कर सकता है। यह व्याख्या भी जरूरी है कि इस्लाम ने सामर्थ्य और न्याय की शर्त के साथ इस की अनुमति दी है, इसे मुसलमानों के लिए फर्ज या वाजिब नहीं ठहराया है। इस्लाम विरोधी इस नियम के माध्यम से इस्लाम पर चोट करते हैं। हालांकि इस्लाम ने यह नियम बनाकर समाज को बहुत–सी बुराइयों से बचा लिया। जिन्सी जरूरतों को जायज रास्ते से पूरा करने का इंतिजाम करके इस्लाम ने सभी नाजायज रास्तों को बन्द कर दिया।

जिन समाजों में ऐसी व्यवस्था नहीं है, वहां के लिए नाजायज ताल्लुकात एक गंभीर समस्या है। एक–एक पुरूष कई–कई महिलाओं से नाजायज संबंध रखते हैं, जिसके कारण समाज में गंदगी और अश्लीलता तो फैलती ही है महिलाओं के अधिकार भी प्रभावित होते हैं। इस्लाम औरतों को आदर और सम्मान के साथ घर की मलिका बनाता है, जबकि दूसरे समाजों में उनकी स्थिति रखैल की होती है। इस्लाम ने एक पुरुष के साथ चार महिलाओं को रखैल बनाकर रखने का हुक्म नही दिया, बल्कि चारो के साथ बराबरी का सलूक करते हुए उन्हें पत्नी बनाने का हुक्म दिया।

(पृष्ठ ६ का शेष)

मुशकिल है जैसा कि उस खयाली जजीरह (काल्पनिक टापू) अटलान्टिस जो अफलातून के कहने के मुताबिक इनकिलाबे अरजी (पृथ्वी परिवर्तन) की वजह से तबाह हो गया।''

फिर यह लिखने के बाद कि वेद और रामायण महाभारत से किसी कदर इस मुल्क के हालात पर रोशनी पड़ती है, लिखता है –

''हिन्दुस्तान का तारीखी जमाना (इतिहासिक काल) वास्तव में मुसलमानों की फौजकशी के बअद से शुरू हुआ और हिन्दुस्तान के पहले इतिहासकार मुसलमान थे।''

नयारंग ढंग :

हिन्दुस्तान को मुसलमानों से आमतौर पर एक नई सोच और एक नया विचार मिला, यहां की सभ्यता और संस्कृति पर भी उनका प्रभाव पड़ा, कला और शिल्प के मैदान में भी उन्होंने नए नए आविष्कार किये, गरज कि उनके आने से एक क्रान्ति आ गई जिस ने यहां के पुराने ढांचे को बिलकुल बदल दिया, यह रचनात्मक बदलाव था जिस का फाइदा देश के सभी वासियों ने उठाया।

हल्दी

हल्दी खांसी के लिए बड़ी लाभदायक है। इसको आग में भून कर बारीक पीस लिया जाए और एक ग्राम गुनगुने पानी से खाया जाए। बलगमी खांसी चन्द रोज के इस्तिअमाल से ठीक हो जाती है।

हल्दी चोट के दर्द और सूजन को दूर करती है। चोट अन्दरूनी हो या बाहरी हल्दी को पीस कर एक ग्राम दूध के साथ खिलाएं और हल्दी और चूना बराबर पीस कर चोट की जगह पर लगाएं बड़ी लाभदायक दवा है दर्द और सूजन को दूर कर देती है। हल्दी को उबालकर पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

इस्लाम क्या है ?

इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद (उपास्य) नहीं और मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, और नमाज़ क़ाइम करो, माल की ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो और रास्ते की सुहूलतें मुहय्या (प्राप्त) हों तो ह़ज्ज करो।

(हदीस)

इस्लामी उसूलों में ही मानवता की भलाई है

मु० सफीउल्लाह सीवानी

पूरी दुनिया में न कोई मजहब ऐसा है और न ही कोई मुल्क जिसके पास जिन्दगी गुजारने के सभी उसूल हों जो अपने लोगों और अपने क्षेत्र में रहने वालों का पूर्ण मार्गदर्शन कर रहा हो। यह विशेषता केवल इस्लाम की है कि वह अपने मानने वालों को कुरआन और हदीस के रूप में सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था देता है। इसमें घरेलू, सामाजिक और आर्थिक जीवन की सभी समस्याएं स्पष्ट रूप से बयान कर दी गयीं हैं। आज हम पूरे दावे के साथ कह सकते हैं कि दुनिया में शांति स्थापित करने के लिए इस्लामी नियमों का विकल्प कहीं नहीं है।

शांति प्रिय लोगों को अंधकार की ओर ले जाने वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण चीज अन्यायपूर्ण ढंग से खून बहाना है। सीधी–सी बात है कि परिवार के किसी सदस्य की यदि किसी अपराध के बिना ही हत्या कर दी जाएगी तो परिवार वाले भी खून का बदला लेना चाहेंगे। जब ऐसी स्थिति पैदा होगी तो संसार में नफरत और दुश्मनी फैलेगी। यही कारण है कि संसार के कई देशों में इस सम्बन्ध में कठोर कानून बनाये गये हैं। जब हम इस्लाम में इस विषय पर देखते हैं तो पाते हैं कि कुरआन कहता है कि बिना अपराध के एक आदमी की हत्या सम्पर्णू मानवता की हत्या है। ऐसी स्थिति में कुरआन मरने वाले के संबंधियों को किसास का अधिकार देता है या वे चाहें तो उसे माफ कर सकते हैं। पूरी दुनिया के कानून में कहीं भी इस से बेहतर कानून नजर नहीं आता है।

अशांति फैलाने का दूसरा कारण 'जिना' है। जिस परिवार की आबरू लुटती है वह बलात्कारी से बदला लेने पर तुल जाता है और जिस के कारण शांति को खतरा पैदा हो जाता है। यही कारण है कि इस्लाम बलात्कार को एक घिनौना गुनाह मानता है। कुरआन कहता है कि शादी–शुदा बलात्कारियों को संगसार कर दो ताकि दूसरों को इस गुनाह के बारे में सोचने की भी हिम्मत न पड़े और गैरशादी–शुदा लोगों को १०० कोड़े लगाये जाएं ताकि लोगों की इज्जत आबरू सुरक्षित रह सके। इस्लाम विरोधी लोग कहते हैं कि ये पुराने समय के कानून थे आज इसकी जरूरत नहीं है, लेकिन ऐसे लोग जो आज होने वाले बलात्कारों का तुलनात्मक अध्ययन नहीं करते हैं। बलात्कार से पैदा होने वाली प्रत्येक बुराई को हर कोई अच्छी तरह समझ सकता है।

इस्लाम ने औरत को परदे की चीज बताकर उसे परदे में रहने का हुक्म दिया है, लेकिन यूरोपियन इसे औरत पर जुल्म बताते हैं और कहते हैं कि इस्लाम ने औरत की आजादी छीन ली है। वे औरत और मर्द की बराबरी की बात इतनी सुन्दरता से करते हैं कि औरत उनके झांसे में आ जाती है। बेपर्दगी के क्या–क्या दुष्प्रभाव हैं, इसे यूरोप अच्छी तरह जानता है। वहां हर तीसरा बच्चा नाजायज होता है। वहां आपस के पवित्र रिश्तों का अब कोई मूल्य नहीं रह गया है। स्विट्जरलैंड की एक महिला ने अभी हाल में ही अपने बेटे से शादी करके पूरी दुनिया को शर्मसार किया है और वहां की सरकार ने भी उन्हें पति–पत्नी मान लिया है।

जकात और सद्का के कानून बनाकर इस्लाम ने गरीबों और मोहताजों की मदद की व्यवस्था की है ताकि समाज चोरी, डकैती, लूट–पाट आदि से सुरक्षित रहे। रोजा को लाजिम करके इस्लाम ने मालदारों को भूख और प्यास का एहसास दिलाया कि उन्हें गरीबों की तकलीफ का एहसास हो सके। नमाज और दूसरी इबादतों में जमाअत का एहतिमाम करके ऊंच–नीच के भेद–भाव को हमेशा के लिए समाप्त करने की कोशिश की गयी है। इस्लाम ने अपनी रियासत में गैरमुस्लिमों को भी उनकी सभ्यता और संस्कृति के साथ जीवन गुजारने का अधिकार दिया है और सत्ता पक्ष को याद दिलाया है कि जिम्मी जनता के साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए इस्लाम ने जेहाद का नियम बनाया, ताकि अत्याचार करने वालों को जवाब दिया जा सके।

इस्लाम में बहुपत्नित्व • की अनुमति आज दुनिया भर के बुद्धिजीवियों के लिए चर्चा का विषय बना हुआ है। इस्लाम ने सामर्थ्य रखने

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

ज़िक्रे शहादते हज़रत हुसैन (रज़ि०) मंज़ूम

अबू मर्गूब

ऐ ख़ुदा तू ही मेरा मअ़्बूद है
फ़ज़्ल तेरा हर जगह मौजूद है
मानता हूं मैं मुहम्मद को रसूल
ऐ ख़ुदा ईमान मेरा कर क़बूल
सद हज़ारां बार हो उन पर सलाम
भेज उन पर रहमतें या रब मुदाम
रहमतें हों आल पर उनकी सदा
और सब अस्हाब पर भी ऐ ख़ुदा
बू बक्र और फ़ारूक़ और उस्मां अ़ली
थी ख़िलाफ़त राशिदा उन को मिली
थी ख़िलाफ़त भी हसन की राशिदा
यह तो उलमा ने कहा है बरमला
था अ़लीयो मुआ़विया में कुछ ख़िलाफ़
पर नहीं ज़ेबा बयाने इख़्तिलाफ़
थे सहाबा भी तो आख़िर आदमी
हो गई गर उन में कोई अन बनी
अन बनी में भी तो वो मुख़्लिस रहे
हर अ़मल में अपने वो मुख़्लिस रहे
चाहिए हमको न उन में कुछ कहें
है यही हक़्क़े सहाबा हम सुनें
छोड़ो तारीख़ी रिवायत दोस्तो
गर बुराई तुम सहाबा की पढ़ो
आ़म मोमिन की बुराई भी न लो
या रिवायत की सनद मज़बूत हो
जो सुना तारीख़ वालों ने लिखा
ख़ुद न देखा जा के कोई वाक़िआ
सब सहाबा से ख़ुदा राज़ी हुआ
फ़ैसला ये साफ़ है क़ुर्आन का
सुल्ह दिल से की हसन ने जिस घड़ी
फिर ख़िलाफ़त मुआ़विया की हो गयी
ये हसन इब्ने अ़ली ने कह दिया
हक जो था मेरा इन्हें मैंने दिया
थी ख़िलाफ़त मुआ़विया की बेमिसाल
राशिदा के बअ़्द थी अपनी मिसाल
मुआ़विया के बअ़्द में आया यज़ीद
था लिखा बस इस लिये आया यज़ीद
किस के बस में था मिटा देता लिखा
हो के रहता है लिखा तक़्दीर का

मुआ़विया ने जब किया उसको वली
अहल समझा तब किया उसको वली
उस से अफ़ज़ल गो वहां मौजूद थे
और सहाबा भी वहां मौजूद थे
चुन्ना उन में से ये मुश्किल काम था
छोड़ना उन पर भी मुश्किल काम था
ख़तरा था उम्मत में होगा कुश्तो ख़ूं
मुआ़विया ने सोचा झगड़ा हल करूं
बअ़्द मेरे हो न क्यों वाली यज़ीद
मस्लहत है इस में हो वाली यज़ीद
लेक था ये इज्तिहादे मुआ़विया
कुछ सहाबा ने इसे नाहक़ कहा
जब वली अ़हदी की बैअ़त ली गयी
उस से जो सहमत न थे बैअ़त न की
मुआ़विया का हो गया जब इन्तिक़ाल
उन के बेटे का रहा वैसा ही हाल
यअ़्नी बैअ़त की न सब ने उस के हाथ
कुछ सहाबा ने दिया गर उस का साथ
हैं हुसैने बा सफ़ा उसके ख़िलाफ़
और थे इब्ने ज़ुबैर उस के ख़िलाफ़
अ़हद उस का तो नहीं अच्छा रहा
हर तरफ़ बस कुश्तो ख़ूं होता रहा
अ़हद में उस के हुआ क़त्ले हुसैन
फ़ौज ने उस की किया क़त्ले हुसैन
गर वो रोया बअ़्द में तो क्या हुआ
होना था जो कुछ वो अब तो हो गया
गो नहीं था क़त्ल में शामिल यज़ीद
पर था कितना फ़र्ज़ से ग़ाफ़िल यज़ीद.
दिल में आया क़िस्सा कुछ उसका लिखूं
ता अयां हो करबला का कुश्तो ख़ूं
जब हुआ था मुआ़विया का इन्तिक़ाल
जान लो था साठवा हिजरत का साल
हस्बे बैअ़त तख़्त पर बैठा यज़ीद
अत्क़िया कुछ उस को कहते थे पलीद
दब दबा पर उस का ऐसा था वहां
हो मुख़ालिफ़ कोई ये हिम्मत कहां
थे मदीने में हुसैन इब्ने अ़ली
और अ़ब्दुल्लाह से जैसे जरी

दोनों ने इन्कार बैअ़त से किया
और हर इक मक्के को बस चल दिया
बेवफ़ाई कूफ़ियों की थी खुली
फिर भी वां से इक जमाअ़त चल पड़ी
आगे पीछे क़ासिदों का सिल्सिला
था तसल्सुल से बराबर चल रहा
कूफ़े वालों ने हज़ारों ख़त लिखे
और लिखा हज़रत यहां अब आइये
आप के आने से होगी यां पे अ़ीद
साफ़ कहते हैं कि है फ़ासिक़ यज़ीद
हम ने माना आप को अपना अमीर
हुब्बे आले पाक के हैं हम असीर
अब हुसैन इब्ने अ़ली मजबूर थे
वअ़्दों और क़समों में वो महसूर थे
अहले मक्का को ख़बर जब ये मिली
मुख़्लिसों में पड़ गई तब खलबली
अ़ब्द बिन अ़ब्बास भी पहुंचे वहां
थे हुसैन इब्ने अ़ली बैठे जहां
बोले मेरे मुहतरम मत जाइये
कूफ़ियों के धोखे में मत आइये
आप के वालिद को था धोखा दिया
साथ भाई जान के फिर क्या किया
कूफ़ी ला यूफ़ी मसल मशहूर है
और वफ़ा उन से बहुत ही दूर है
फिर हक़ीक़त जानने को आप ने
भेजा इब्ने अ़म को अपने आपने
कूफ़े को मुस्लिम रवान हो गये
साथ में दो रहनुमा भी ले लिये
रहनुमा तो रास्ते में चल बसे
राहे हक़ में रब को वो प्यारे हुए
झूठ है ये साथ में बच्चे थे दो
बोलो जब भी तुम ख़ुदा लगती कहो
कूफ़े में मुस्लिम की जब आमद हुई
सच यही है आज वां तो अ़ीद थी
हर कोई बेचैन था बैअ़त करे
और हुसैन इब्ने अ़ली का साथ दे
आख़िरश उन का लगाया जब शुमार
हो गये थे वो तो अट्ठरा हज़ार

लिक्खा मुस्लिम ने तभी ऐ इब्ने अ़म
ऐ हुसैन इब्ने अ़लीये मुह़तरम
यां तो हर इक आप का है जां निसार
आप की ख़ातिर है हर इक बेक़रार
जब तलब मैं ने की बैअ़त आप की
कूफ़े की मख़्लूक़ मुझ पर झुक पड़ी
जब किया था मैं ने उन सब का शुमार
गिनती में थे वो तो हश्तो दह हज़ार
ऐ मेरे भाई न अब घबराइये
है मेरी ये राए फ़ौरन आइये
आठ ज़िल्हिज्जा थी और सन साठ था
हाजियों का वां हुजूमे ख़ास था
इक तरफ़ था कोफ़े की क़समों का ज़ोर
दूसरी जानिब यज़ीदियों का शोर
बस ह़रम में कुश्तों खूं के ख़ौफ़ से
कर तवक्कुल कूफ़े को वो चल पड़े
मुख़्लिसों ने रोका हर तदबीर से
उ़ज़्र कर कर सब से वो चलते रहे
लो सुनो कूफ़े में अब क्या हो गया
ज़ुल्म उ़बैदुल्लाह का वां चल गया
आख़िरश मुस्लिम वहां मक़्तूल थे
कूफ़े वाले बस वहां मजहूल थे
रास्ते पर क़ाफ़िला था चल रहा
इस ख़बर से दिल तो सब का हिल गया
ज़ालिमों से क्यों करें फरयाद वो
बुज़दिलों की क्यों चलें अब चाल वो
बुज़दिलाना पीछे हट सकते नहीं
शेर हैं रूबाह से डरते नहीं
क़स्द कूफ़े का अभी बाक़ी रहा
कैसे लौटें भाई मुस्लिम ना रहा
आगे देखा साथ में लशकर लिये
क़ुर्बे कूफ़ा ह़ुर भी आ ह़ारिज हुए
जब नमाज़े ज़ुह्र ह़ज़रत ने पढ़ी
ह़ुर थे पीछे और उन की फौज थी
जब नमाज़े ज़ुह्र से फ़ारिग़ हुए
ख़िदमते अक़्दस में ह़ुर ह़ाज़िर हुए
हुर ये बोलें अब तो है ह़ुक्मे यज़ीद
जानिबे कूफ़ा न बढ़िये अब मज़ीद
मक्के की जानिब भी हरगिज ना चलें
और चाहें आप जिस जानिब चलें

करबला पहुंचे तो मंज़िल वां पे की
दिल ये बोला हे ये मंज़िल आप की
दो मुह़र्रम और था इक्सठ का साल
जब यज़ीदी फ़ौज ने फैलाया जाल
भेजता पैग़ाम था इब्ने ज़ियाद
मांगता था आप से बैअ़त का हाथ
तीन बातें आप ने रखीं वहां
मैं जहां से आया फिर जाऊं वहां
या किसी सरहद पे मुझ को जाने दो
और मुक़द्दर का लिखा वां पाने दो
या मुझे भेजो जहां पर है यज़ीद
मसअला ता और ना उल्झे मज़ीद
एक ना मानी उ़बैदुल्लाह ने
और घेरा तंग किया बद ख़्वाह ने
आख़िरश अब सुब्ह़ दस की आ गई
और आलम पर उदासी छा गई
था मुह़र्रम का महीना ला कलाम
चाहिए था जंग उस में हो ह़राम
और आ़शूरा का दिन था मुह़तरम
जिस में है होता रहा रब का करम
काश उ़बैदुल्ला को होता कुछ ख़याल
आख़िरत का सोच लेता वो मआल
कैसा ग़ाफ़िल था यज़ीदे बे वफ़ा
जब कि मामा लगता था ह़स्नैन का
उस की फूफी जो थीं उम्मुल मोमिनीं
बे शुबह ह़सनैन की नानी हुई
रिश्ता भूला और भूला रुत्बा भी
वो सहाबी और ये था ताबअ़ी
फ़ौजे ज़ालिम ने मज़ालिम ढा दिये
थे बहत्तर पर हज़ारों से लड़े
थी शहादत इन की क़िस्मत में लिखे
और शक़ावत उन की क़िस्मत में लिखी
वो बहत्तर के बहत्तर थे शहीद
ह़ुर भी उनके साथा होकर थे शहीद
छे महीने के अ़ली असग़र शहीद
सब से आख़िर में हुए ह़ज़रत शहीद
इक बचे बीमार ज़ैनुल आ़बिदीं
ज़िन्दगी सारी रही उन की ह़ज़ीं
सर हुसैन इब्ने अ़ली का कट गया
करबला में जिस्म बे सर रह गया

आप का सर कूफ़ा पहुंचाया गया
और फिर दरबार में लाया गया
सर मुबारक देख कर बदख़्वाह ने
बद तमीज़ी की उ़बैदुल्लाह ने
इक सह़ाबी ने वहीं टोका उसे
उस की इस ह़रकत से वां रोका उसे
उस ने उन को भी बुरा जुम्ला कहा
था तसल्लुत उस पे तो शैतान का
बअ़्द अज़ां वो औ़रतों का क़ाफ़िला
और ज़ैनुलआबिदीं बीमार का
कूफ़े से फिर शाम को भेजा गया
था जहां रहता यज़ीदे बेवफ़ा
जब शहादत की ख़बर उस ने सुनी
अब नहीं है यां हुसैन इब्ने अ़ली
क़ाफ़िले को देख कर रोने लगा
और उस के घर में था मातम बपा
थी ह़क़ीक़त या कि ये सब मक्र था
इस को तो बस जानता है रब मेरा
सच ये है डांटा गया इब्ने ज़ियाद
पर सज़ा से बच रहा इब्ने ज़ियाद
औ़रतों को रखा वां इक्राम से
अपने घर में ख़ूब ही आराम से
और ज़ैनुलआबिदीं का एह़तिराम
करता था दरबार में हर ख़ासोआ़म
कुछ दिनों के बअ़्द फिर इकराम से
तुह़फ़ वो ह़दया के भी कुछ नाम से
क़ाफ़िले को वां से फिर भिजवा दिया
और मदीने तय्यिबा पहुंचा दिया
क़त्ल मोमिन का किया जिस ने सुनो
नार है उस का ठिकाना जान लो
और जो राहे ख़ुदा में क़त्ल हो
वो है ज़िन्दा मुर्दा उस को मत कहो
है शहीदों का बहुत ऊंचा नसीब
हो शहादत मुझ को भी या रब नसीब
हो शहीदों से मुझे उल्फ़त मुदाम
रमह़तें उतरा करें उन पर मुदाम
ऐ मेरे अल्लाह तेरा हो करम
हो करम तेरा तो फिर क्या मुझ को गम
तू नबीये पाक पर रह़मत उतार
और सलाम उन पर हों दिन में लाख बार

उर्दू और हिन्दी

लिखावट में सिर्फ इतना अन्तर!

एम०हसन अन्सारी

हिन्दी साहित्य, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और दैनिक व्यवहार में बोल–चाल की भाषा में उर्दू के अनेक शब्द प्रयोग में आते हैं। मूलतः उर्दू एक लशकरी भाषा है– उर्दू भाषा में फारसी, अरबी, तुर्की भाषा के अनेक शब्द शामिल हैं और लिखे, पढ़े तथा बोले जाते हैं जैसे परवाना, लशकर, काश्त, दोस्ती, जमीन फारसी शब्द हैं, कुर्सी, मुकदमा, कदम, जमाना, किताब अरबी के शब्द हैं और बेग, बहादुर, चेचक, तमगा, बुलाक तुर्की भाषा के शब्द हैं। उर्दू में अरबी और फारसी भाषा के शब्दों की संख्या काफी है जबकि तुर्की भाषा के शब्द बहुत कम आये हैं।

हम यहां कुछ शब्दों की एक सूची प्रस्तुत करते हैं। यह शब्द हमारे प्रयोग में अक्सर आते रहते हैं। इनके उर्दू और हिन्दी में लिखे जाने में और उच्चारणा अर्थात बोले जाने में बहुत थोड़ा अन्तर है। यह सूची पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए देवनागरी लिपि में प्रस्तुत की जा रही है –

उर्दू	हिन्दी	उर्दू	हिन्दी
चचा	चाचा	धोका	धोखा
मामूं	मामा	आंचल	अंचल
बन	वन	जहेज़	दहेज
खम्बों	खम्भों	पलरा	पलड़ा
बनवास	वनवास	समन्दर	समुद्र
परवा	परवाह	साया	छाया
गुरोह	गिरोह	दसहरा	दशहरा
चंबेली	चमेली	पैराक	तैराक
बरस	वर्ष	मिशअ़ल	मशाल
महब्बत	मुहब्बत	काफ़ूर	कपूर
बिठाकर	बैठाकर	बिला इजाज़त	बिना इजाजत
बियाह	विवाह	सुवाल	सवाल
नियाम	मियान	परशाद	प्रसाद
धचका	धक्का	पैरहन	पहनावा
झूटा	झूठा		
समाजी	सामाजिक		
शाख	शाखा		

इस तरह के और बहुत से शब्द हो सकते हैं और यह सूची लम्बी हो सकती है।

कुछ उर्दू शब्दों के उच्चारण में कुछ लोग भ्रम में हैं ऐसी दशा में उर्दू शब्द कोष से सम्पर्क करना चाहिए जैसे : "गुरोह" नूरूल्लुगात में लिखा है : यह शब्द फार्सी का है, पहले और दूसरे हर्फ को पेश, वाव मज्हूल सहीह, पहले हर्फ को जबर गलत, शब्द "बुलन्द" नूरूल्लुगातः यह शब्द फार्सी का है इस का पहला हर्फ जबर, जेर, पेश तीनों से सहीह है शब्द "लहसुन" देखें नूरूल्लुगात : यह शब्द हिन्दी का है, पहले हर्फ को जबर, तीसरे को जबर से भी बोलते हैं पेश से भी, लेकिन जबर से लहसन, अहसन के वजन पर गैर फसीह है, बेगमात की जबान में लस्सन है। शब्द देहली सिर्फ उर्दू वाले लिखते हैं हिन्दी वाले नहीं लिखते लेकिन दिल्ली हिन्दी में भी लिखते हैं और उूर्द में भी देखें नुरूल्लुगात उस्ताद ज़ौक का शिअर पेश किया :

इन दिनों गर्चि दक्खन में है बहुत कद्रे सुखन।
कौन जाए ज़ौक पर दिल्ली की गलियां छोड़कर।।

शब्द सिफारिश हर उर्दू लुगात में मिलेगा कोई उर्दू दां सुफारिश नहीं बोलता है। निःसन्देह हिन्दी साहित्यकारों ने अरबी फारसी के बहुत से शब्दों को अपना कर एक ओर उन्होंने अपनी उदारता का सुबूत दिया है तो दूसरी ओर उन्होंने हिन्दी भाषा में निखार भी पैदा किया है। आधुनिक साहित्य में हिन्दी रहित उर्दू, उर्दू नहीं तथा उर्दू रहित हिन्दी, हिन्दी नहीं पर यहां एक आवश्यक बात ध्यान में लाना चाहिए कि हमारी सरकार ने या कुछ राजनीति के लोगों ने संकेत दिया था कि उर्दू, देव नागरी लिपि में लिखी जाए जिस का उर्दू वालों ने घोर विरोध किया था। अगर्चि सरकारी तौर पर इस कार्य के लिए एक फन्ड नियुक्त हो गया परन्तु उर्दू वालों ने उसे हाथ न लगाया, कुछ हिन्दी वालों ही ने उस से लाभ उठाया और लाभ उठा रहे हैं। इतनी कुर्बानी के पश्चात जो साहित्यकार उर्दू हिन्दी दोनों में साहित्य सेवा कर रहे हैं उन का कर्तव्य है कि हिन्दी में लिखे जाने वाले उर्दू शब्द (जो अरबी फार्सी से आए हैं) उन का उच्चारण अपने कलम से बिगाड़ कर

अपने ही हाथों अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी न मारें अल्बत्ता केवल हिन्दी भाषी उर्दू के शब्द गलत उच्चारण से लिखें बोलें तो उन के साथ उदारता से काम लें अल्बत्ता यदि उन को शुद्ध उच्चारण से परिचित करने की चेष्ठा करते रहें तो यह उन की उर्दू सेवा होगी।

एक और गलती

सज्जनों व सज्जनों, मित्रो व मित्रों, भाइयो व भाइयों के प्रयोग में देखी और सुनी गई है। सम्बोधन में सम्बोधन के चिन्ह के साथ सज्जनों, मित्रों, भाइयों लिखना या बोलना गलत है। सज्जनों! मित्रों! भाइयो! बोलना और लिखना सहीह है, वाक्य में यही शब्द जब आयेंगे तो सज्जनों, मित्रों, भाइयों लिखा और बोला जायेगा जैसे सज्जनों का सत्संग आचरण को निखारता है, वह अपने मित्रों के साथ कहीं जा रहा था। दोनों भाइयों में खूब बनती है।

उर्दू के कुछ शब्द हिन्दी में कैसे लिखें

शामे अवध, सुबहे बनारस, शबे बुन्देल खण्ड अर्थात अवध की शाम, बनारस की सुबह और बुन्देलखण्ड की शब यानी रात की अपनी अपनी विशेषता है जिस के लिये यह मशहूर हैं। हिन्दी में इन शब्दों को शाम–ए–अवध, सुबह–ए–बनारस़, शब–ए–बुन्देल खण्ड लिखना सहीह नहीं है। रघुपति सहाय 'फिराक' के काव्य संग्रह को उनके जीवन काल में हिन्दी में प्रकाशित किया गया तो उस का नाम "गुले नग़मा" इसी तरह लिखा गया है जब कि गुलहा–ए–अकीदत, बरा–ए–मेहरबानी, दरिया–ए–गंगा इस तरह लिखा जायेगा। इन अथवा इन जैसे शब्दों के सही न लिखने का चलन बढ़ता जा रहा है। जो बहर हाल खटकता है और साहित्य जगत पर गिरां गुजरता होगा, ऐसा मेरा विचार है।

इधर कुछ वर्षों से ऐसे पत्र–पत्रिकाओं की संख्या में कमी आयी है जो भाषा की कसौटी पर खरी उतरती हों। साहित्य जगत में इस का नोटिस लिया जाना चाहिए। इस लिये कि लेखन कार्य में उचित शब्दों का प्रयोग अगर न किया गया तो अर्थ का अनर्थ होने की सम्भावना बनी रहती है।

अहिन्दी भाषा प्रदेश आंध्र प्रदेश में हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ विचारक, समालोचक और निबन्धकार प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी अपने निबन्ध "भाषा और आधुनिकता" में लिखते हैं :–

"कभी–कभी अन्य संस्कृतियों के प्रभाव से और अन्य जातियों के संसर्ग से भाषा में नये शब्दों का प्रवेश होता है और इन शब्दों के सहीह पर्यायवाची शब्द अपनी भाषा में न प्राप्त हों तो उन्हें वैसे ही अपनी भाषा में स्वीकार करने में किसी भी भाषा–भाषी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।"

"हिन्दी भाषा के नवीनीकरण (शुद्धीकरण) की प्रगति के अवरोध में दो वर्ग बाधा डालते हैं। प्रथम वह वर्ग जो अपनी शुद्ध साहित्यिक दृष्टि के कारण आम प्रचलित उन पराए शब्दों को यथावत ग्रहण करने में संकोच करता है। दूसरा पृष्ठभूमि के अभाव में उन प्रयुक्त विदेशी शब्दों को मनमाने ढंग से विकृत कर अपनी मातृ भाषा में थोपना चाहता है।"

"नवीनीकरण कितना ही प्रशस्त कार्य क्यों न हुआ हो उस प्रक्रिया में यह भूलना नहीं चाहिए कि भाषा का मुख्य कार्य सुस्पष्ट अभिव्यक्ति है।"

"उर्दू में प्रयुक्त अरबी और फारसी के शब्दों को, जो इस्लाम धर्म के करने वाले हैं, हिन्दी वाले त्यागना आरम्भ करें, तो हिन्दी भाषा न रह कर एक दम बनावटी बनेगी।"

(पृष्ठ ४० का शेष)

को सम्बोधित करते हुए वामपंथी नेता ने बुश को शैतान करार दिया और कहा वे (बुश) ऐसे बात करते हैं जैसे वे दुनिया के मालिम हों। अमेरिका के धुर विरोधी और ईरान के समर्थक श्री शावेज ने कहा कि वर्तमाान में संयुक्त राष्ट्र एक अलोकतांत्रिक संस्था है और ईसमें सुधार किया जाना बेहद जरूरी है अन्यथा यह काम नहीं कर पाएगा।

सत्ता संभालने वाले पहले मुस्लिम

बैंकाक। तख्तापलट का नेतृत्व करने वाले सेना प्रमुख जनरल सोंथी बोनीयारताग्लिन सोंथी बूनीयारतगलिन थाईलैंड के राजा के काफी करीबी माने जाते हैं। इसके अलावा इस बौद्ध राज्य की सत्ता संभालने वाले वह पहले मुस्लिम हैं। अपदस्थ प्रधानमंत्री थासकिन शिनावात्रा ने पिछले साल सोंथी बोनीयारताग्लिन यह सोच कर सेना प्रमुख बनाया था कि वह देश में बढ़ रहे मुस्लिम आतंकवाद पर काबू पाने में कामयाबी हासिल कर लेंगे। हालांकि सोंथी उनकी सुरक्षा नीति से सहमत नहीं थे। इस को लेकर दोनों के बीच मतभेद कई बार खुले तोर पर दिखाई भी पड़ चुके थे। सोंथी मुस्लिम आतंकवादियों से बातचीत करके समस्या को सुलझाने के पक्षधर हैं। हाल के दिनों में उनकी करीबी राजा भूमिबोल अदुल्यादेज से काफी बढ़ गयी थी। उनको एक तरह से राजा का अनौपचारिक रूप से प्रवक्ता भी माना जाने लगा था।

इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) का तक़्वा और उनकी इस्तिक़ामत

जब अ़ब्बासी ख़लीफ़ा मंसूर बग़दाद का ख़लीफ़ा हुआ तो क़ाज़ी का मन्सब (पद) देने के लिए ख़लीफ़ा की नज़र ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) पर पड़ी, चुनांचि ख़लीफ़ा ने इमाम (रह़०) को कूफ़ा से तलब करके क़ाज़ी का मन्सब क़बूल करने को कहा। ह़ज़रत इमाम साह़िब ने उज़्र किया। ख़लीफ़ा ने क़सम खा कर कहा मैं तुम को क़ाज़ी मुक़र्रर करूंगा। इमाम साह़िब ने जवाब में क़सम खा कर कहा कि मैं इस मन्सब को क़बूल न करूंगा। ख़लीफ़ा ने दोबारा क़सम खा कर कहा मैं तुम को क़ाज़ी बना कर रहूंगा। इमाम साह़िब ने भी दोबारा क़सम खा कर कहा मैं इस मन्सब को क़बूल नहीं कर सकता और अपने इन्कार की वजह यह बताई कि मैं अपने आप को इस मन्सब के क़ाबिल नहीं समझता।

ह़ाजिब (दरबान) इब्ने रबीअ़ा (जो दरबार में ह़ाज़िर था) ने ख़लीफ़ा की ख़ुशामद की राह से कहा कि अमीरूल मोमिनीन क़सम खा चुके हैं फिर भी तुम इन्कार किये जाते हो? इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़०) ने फ़रमाया : अमीरूल मोमिनीन के लिए क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करना मेरे मुक़ाबले में ज़ियादा आसान है। ख़लीफ़ा जब इमाम साह़िब के इरादे को बदल न सका तो इमाम साह़िब को जेल भेज दिया और जेल ही में इमामे अअ़ज़म ने सन० १५० हिज्री में वफ़ात पाई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

(वफीयातुल अअयान जि० ५ पू० ४०६)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

● गुवानता नामोबे में कैदियों पर अत्याचार

सऊदी गृह मंत्रालय के एक प्रवक्ता के अनुसार गुमानतानामोबे जेल में मुर्दा पाए जाने वाले दो सऊदियों के नामों की घोषणा कर दी गयी है जिनके नाम माना बिन शामान अलअतीमी और यासिर तलाल अलजहरानी हैं। सऊदी अरब अपने दोनों कैदियों की लाशें वतन वापस लाएगा। इसी दर्मियान सऊदी अरब के मानवाधिकार की राष्ट्रीय विधान सभा के उपाध्यक्ष मफलः अलकहतानी ने आत्महत्या के आरोप को गलत बताते हुए कहा है कि इल्ज़ाम लगाना आसान है कि कैदियों ने आत्महत्या की है। दोनों सऊदियों की मौत का जिम्मेदार अमेरिका है कारण कोई भी हो, क्योंकि सूचनाओं के अनुसार कैदियों पर दिमागी और शारीरिक अत्याचार किया जा रहा था। उन्होंने मांग की कि मौत की जांच के लिए संयुक्त राष्ट्र और दूसरीअन्तर्राष्ट्रीय संस्था जांच कमीशन काइम करे।

● इस्लामी दुनिया में हलाल आहार, पेय पदार्थ और जाइज चीजों की मार्केटिंग पर जोर दिया है

मलेशिया के सबसे बड़े नगर राजधानी कोलालमपुर में तीन दिवसीय इस्लामिक अन्तर्राष्ट्रीय मेला सम्पन्न हुआ। इस व्यापारिक मेले में १४ देशों के १० से अधिक मुसलमान व्यापारिक घरानों ने शिरकत की। इस नुमाइश का उद्देश्य मुस्लिम उपभोक्ताओं द्वारा वस्तुओं की बढ़ती हुई मांग को पूरा करना था और इस्लामी दुन्या में हलाल और जाइज वस्तुओं की मार्केटिंग को बढ़ावा देना था। उपरोक्त व्यापारिक मेले में कुर्आन हकीम के वीडियो टेप से लेकर हलाल और जाइज वस्तुएं रखी गई थीं। विभिन्न मुस्लिम देशों से यह मांग की गई थी कि पेप्सी और कोकाकोला के स्थान पर जाइज इस्लामी पेय पदार्थ पेश किये जायें। ईराक पर अमेरिकी हमले के बाद मुस्लिम दुन्या में अमेरिकी और पश्चिमी दुन्या में तैयार की गयी वस्तुओं को बाइकाट करने की अपीलें की गयी थीं। उपरोक्त मेले में मुस्लिम व्यापारियों और उद्योगपतियों ने अधिकतर अपना ध्यान इस्लामी स्वास्थ्य रक्षा के अनुसार तैयार किये हुए हलाल आहार पर केन्द्रित रखा। एक अनुमान के अनुसार हलाल आहार का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार १२३ बिलयन डालर ता ५०० बिलयन डालर है। उपरोक्त इस्लामी नुमाइश में बैंकिंग, फाइनांस, स्वास्थ, प्रसार प्रचार इलेक्ट्रानिक फैशन, आर्ट और मनोरंजन पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस से मालूम हुआ कि मुस्लिम फर्में इस क्षेत्र में अपना एक स्थान बनाने की कोशिश कर रही हैं। इस नुमाइश के प्रबन्धक डा० एस. अब्दुल्ला (मैलेशिया सबा इस्लामिक मीडिया) ने बताया कि यह मुसलमानों की जिम्मेदारी है कि वह अपनी क्षमताओं से पूरे संसार के अच्छी से अच्छी जाइज वस्तुओं की पूर्ति में सहायता दें।

● भारत इसराइल सम्बन्ध हमारे अधिकारों की कीमत पर नहीं होना चहिए

फिलिस्तीन के प्रधान मंत्री इस्माईल हानिया ने कहा कि इण्डो इसराईल सम्बन्ध फिलिस्तीन की जनता के अधिकारों की कीमत पर नहीं होना चाहिए। भारत हमारे क्षेत्र से निकट है वह फिलिस्तीनी जनता के अधिकार की प्राप्ति और उनकी स्वतंत्र राज्य की स्थापना के हक में है। उन्होंने यह बात एक भारती पत्रकार से प्रधानमंत्री बनने के बाद भारती प्रतिनिधि ने सब से पहले मुबारक बाद दी। उन्होंने कहा कि वह फिलिस्तीन की समस्या के हल में बाहर के देशों के सहयोग का स्वागत करते हैं। उन्होंने कहा हमें किसी के यहूदी होने पर कोई आपत्ति नहीं। वास्तव में समस्या इसराईली कब्जे की है। इसराईली कब्जे के कारण फिलिस्तीनी जनता मुसीबतों का शिकार है। उन्होंने कहा हम चाहते हैं कि इसराईल पहले तो फिलिस्तीनी राज्य को मान्यता दे और फिलिस्तीन के उचित अधिकार माने ऐसा होने की दशा में हम अपनी पोजीशन साफ करेंगे।

● शावेज बोले शैतान हैं ज़ार्ज बुश

वेनेजुएला के राष्ट्रपति ह्यूगो शावेज अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश के बारे में अपनी कडुवाहट संयुक्त राष्ट्र महासभा

(शेष पृष्ठ ३८ पर)